सितम्बर, 2022, वर्ष : 43 अंक : 09
www.indiatibet.net

तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका

तिब्बत देश

चेक सीनेट के साथ सिक्योंग पेन्पा छेरिंग।

मूल्य :10 रु , वार्षिक : 100 रु

तिब्बत देश

सितम्बर, 2022, वर्ष : 43 अंक : 09

तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका पहली बार 1979 में प्रकाशित तिब्बत के बारे में सही जानकारी के साथ हर महीने आपके हाथो में

प्रधान संपादक
जमयंग दोरजी

सलाहकार संपादक
प्रो. श्यामनाथ मिश्र , डा. अतुल कुमार

प्रबंध संपादक
तेनजिन पलजोर , तेनजिन जोरदेन

वितरण प्रबंधक
छोन्यी छेरिंग

संपादकीय एवं प्रकाशन कार्यालय :
भारत तिब्बत समन्वय केन्द्र
एच -१० लाजपत नगर -३
नई दिल्ली -११००२४, भारत

तिब्बत देश में प्रकाशित विचरों से संपादक, प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

इसमें प्रकाशित सामग्री का उपयोग अन्यत्र किया जा सकता है। कृपया तिब्बत देश का उल्लेख अवश्य करें ।

परम पवन दलाई लामा के साथ डेवडि यांग।

समाचार -

• यूनाइटेड स्टेट्स इंस्टीव्यूट ऑफ पीस यूथ लीडर्स' के साथ संवाद का पहला दिन 1
• प्रधानमंत्री मोदी को जन्मदिन की बधाई 2
• हिमाचल प्रदेश में मानसून के कारण हुई मौत और तबाही पर चिंता 3
• सीटीए ने तिब्बती लोकतंत्र दिवस की ६२वीं वर्षगांठ मनाई 4
• सीटीए ने तिब्बत में प्राकृतिक आपदा और कोविडप्रभावित तिब्बतियों के लिए प्रार्थना सेवा का आयोजन किया 5
• तिब्बत के खाम करज़े में पुलिस की यातना से दो तिब्बतियों की मौत 6
• तिब्बतियों ने चीन की शून्य कोविडनीति के तहत कठोर शर्तों का खुलासा किया 7
• चीनी अधिकारियों ने सार्वजनिक रूप से प्रार्थना करने पर पांच तिब्बतियों को यातनाएं दीं, एक की मौत 8
• तिब्बति सांसदों- यूडोन औकात्संग और खेंपो जम्फेल तेनज़िन की उत्तराखंड में आधिकारिक यात्रा सम्पन 9
• चेक सीनेट में सिक्योंग पेन्पा छेरिंग के लिए स्वागत समारोह 10

समाचार -

• तिब्बत पर स्विस संसदीय समूह ने तिब्बत और तिब्बत के बाहर रह रहे तिब्बतियों के दमन की सुनवाई की 11
• सिक्योंग पेन्पा छेरिंग ने सप्ताह भर की जापान यात्रा सफलतापूर्वक सम्पन की 12
• सांसद खेंपो कड़ा न्गेडुप सोनम और लोबसांग ग्यात्सो ने पांडिचेरी के मुख्यमंत्री से मुलाकात की, सांसदोंकी आधिकारिक यात्रा सम्पन 13
• भारत-तिब्बत संघ ने उत्तर प्रदेश के ग्रेटर नोएडा में दो दिवसीय राष्ट्रीय चिंतन बैठक का आयोजन किया 14
• दिल्ली में बेनेट विश्वविद्यालय छात्र समूह और तिब्बती गैर सरकारी संगठनों के बीच तिब्बत मुद्दे पर संवाद- सत्र 15
• ब्रेकिंग पॉइंट पर: लॉकडाउन में तिब्बतियों की मदद की गुहार 16

मुद्रक एवं प्रकाशक
जमयांग दोरजी द्वारा
प्रेम गुलाटी , डोली ऑफसेट प्रिंटर्स , डी -१५२ , एफ. एफ. सी. ओखला ,
नई दिल्ली -११००२० से मुद्रीत

तिब्बत के बारे में नियमित जानकारी के लिए भारत - तिब्बत समन्वय केन्द्र की वेबसाइट
www.indiatibet.net
Email:
indiatibet7@gmail.com

अपनी बात ❖ तिब्बती लोकतंत्र दिवस पर हुए विष्वव्यापी समारोह

भारतीय प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी की जन्म तिथि 17 सितंबर के अवसर पर तिब्बती समुदाय में जबर्दस्त उत्साह से स्पष्ट है कि भारतीय जनता और सरकार के सहयोग एवं समर्थन जारी रहने का तिब्बतियों को पूरा विष्वास है। परमपावन दलाई लामा ने नरेन्द्र मोदी को जन्मदिन की बधाई देते हुए उनके नेतृत्व की भी प्रषंसा की। उनके अनुसार प्रधानमंत्री मोदी के कुषल नेतृत्व में भारत ने कोरोना जैसी भयंकर वैष्विक महामारी का सफलतापूर्वक सामना किया है। कोरोना के कारण कई नई चुनौतियाँ सामने आईं जिनका पूर्वानुमान किसी को नहीं था। उस संकटपूर्ण परिस्थिति से निपटने में भारत सफल रहा। दलाई लामा ने विष्वास व्यक्त किया कि नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत भविष्य में भी सभी चुनौतियों का सामना सफलतापूर्वक करेगा। उन्होंने भारत में 1959 से तिब्बतियों के लिये लगातार जारी सहयोग एवं समर्थन के लिए भारतीय जनता और सरकारों के प्रति आभार प्रकट किया। अन्य सभी तिब्बतियों तथा तिब्बत समर्थकों की तरह दलाई लामा को पूर्ण विष्वास है कि तिब्बती संघर्ष में भारतीय सहयोग और समर्थन भविष्य में भी जारी रहेगा।

दलाई लामा के भारतीय समर्थन के विष्वास का मूल आधार तिब्बती संघर्ष का लोकतांत्रिक चरित्र है। वर्ष 2011 में ही तिब्बत के राजप्रमुख दलाई लामा ने अपने समस्त राजनैतिक अधिकार स्वयं छोड़ दिये। तिब्बत एवं तिब्बतियों का लोकतंत्रीकरण करने के लिए उन्होंने अपने पास सिर्फ आध्यात्मिक दायित्व रखे। उनके इस निर्णय से तिब्बती समुदाय में वयस्क मताधिकार के आधार पर मतदान के माध्यम से जनता द्वारा निर्वाचित सरकार का गठन होने लगा। निर्वासित तिब्बत सरकार, जो कि वास्तव में निर्वाचित है, का मुख्यालय हिमाचल प्रदेष के कांगड़ा जिले में स्थित धर्मषाला में है। चुनावी प्रक्रिया के परिणामस्वरूप पहले डॉ. लोबजंग संग्ये और अभी आदरणीय पेंपा त्सेरिंग तिब्बत के सिक्योंग (राजप्रमुख) हैं। भारत चूँकि एक लोकतांत्रिक देष है इसलिये दलाई लामा का भारत में रहकर तिब्बत के लोकतंत्रीकरण का प्रयास पूर्णतः सफल है। इसी 2 सितंबर, 2022 तिब्बती लोकतंत्र दिवस के अवसर पर धर्मषाला में आयोजित विषेष आधिकारिक समारोह में निर्वासित तिब्बत सरकार द्वारा इस योगदान के लिये दलाई लामा के प्रति कृतज्ञता प्रकट की गई।

तिब्बत का लोकतंत्रीकरण दलाई लामा की बहुत बड़ी देन है। इससे भिन्न स्थिति चीन में है। शी जिंपिंग आजीवन राष्ट्रपति बने रहने हेतु संवैधानिक परिवर्तन में लगे हैं। साम्यवादी व्यवस्था के कारण वे इस षड्यन्त्र में सफल हो सकते हैं। चीन में तिब्बतियों के मानवाधिकार हनन तथा उनके खिलाफ जारी क्रूरतापूर्ण हिंसक व्यवहार का कारण चीन की साम्यवादी व्यवस्था ही है। दलाई लामा के लोकतांत्रिक चरित्र और शी जिंपिंग के तानाषाही चरित्र का अंतर यही है। इसी के परिणामस्वरूप लोकतांत्रिक भारत में लोकतांत्रिक तिब्बत सरकार है जबकि साम्यवादी चीन में तिब्बती सभी मूलभूत अधिकारों से वंचित हैं।

इसी सितंबर, 2022 में जनता द्वारा निर्वाचित तिब्बती संसद ने अपने नौ दिवसीय द्वितीय सत्र में तिब्बत में रहने वाले तिब्बतियों के प्रति एकजुटता प्रदर्षित करते हुए सर्वसम्मत प्रस्ताव पारित किया है। इस सत्र में तिब्बत समस्या और तिब्बतियों के कल्याण हेतु कार्यक्रमों की प्रामाणिकतापूर्ण चर्चा हुई। इस प्रकार की चर्चा और प्रस्ताव अन्तरराष्ट्रीय महत्व के हैं। यह सिक्योंग पेंपा त्सेरिंग की चेक गणराज्य और जापान की इसी माह की यात्रा से भी प्रमाणित है। दोनों देषों में सरकारों, नीति निर्माता, संसद, मीडिया तथा बुद्धिजीवी वर्ग ने तिब्बत समस्या के शीघ्र समाधान हेतु तिब्बत एवं चीन सरकार के बीच पुनः वार्ता प्रारम्भ होने पर जोर दिया। विष्व के सभी लोकतांत्रिक देष इसी विचार के हैं। चीन के सभी पड़ोसी देष उसकी विस्तारवादी नीति के षिकार हैं। तिब्बत, ताइवान, हांगकांग तथा पूर्वी तुर्किस्तान साम्राज्यवादी चीन के खिलाफ एकजुट हैं। चीन इन्हें अपना भूभाग बताता है, जबकि ऐतिहासिक प्रमाणों के अनुसार ये चीन में नहीं थे।

वर्तमान परिस्थिति में भारत, अमरीका, जर्मनी, फ्रांस आदि देष और भी व्यवस्थित सहयोग कर तिब्बत एवं चीन के बीच पुनः वार्ता कराने हेतु चीन पर दबाव बढ़ायें। उपयुक्त वातावरण यही है, क्योंकि दलाई लामा के नेतृत्व में तिब्बती संघर्ष पूर्णतः अहिंसक और शांतिपूर्ण है। दलाई लामा के दीर्घजीवन के लिये विषेष पूजादि आध्यात्मिक कार्यक्रम होते रहते हैं। दलाई लामा स्वयं अभी और 15-20 वर्ष जीवित रहने की बात दुहराते रहते हैं। इसके बावजूद याद रखना होगा कि वे अब वयोवृद्ध हो गये हैं। उनके जीवन में तिब्बत संकट का हल जरूरी है।

भविष्य में तिब्बती संघर्ष शांति-अहिंसा की राह से भटक सकता है। तिब्बत का संघर्ष सत्य और धर्म का संघर्ष है। यह सही है कि अहिंसा सबसे बड़ा धर्म है लेकिन धर्म की रक्षा के लिये हिंसा उससे भी बड़ा घर्म है। ''अहिंसा परमो धर्मः धर्म हिंसा तथैव च।'' ऐसी प्रतिकूल परिस्थिति आने से पहले ही इस समस्या का समाधान कर लेना मानवता के हित में होगा। वैष्वीकरण के युग में हिंसक संघर्ष की मामूली घटना भी संपूर्ण समाज को प्रभावित कर देती है। ऐसी स्थिति में शांतिपूर्ण तिब्बती संघर्ष को सार्थक परिणाम तक पहुँचाना एक वैष्विक दायित्व है। अच्छी बात है कि वर्तमान तिब्बती नेतृत्व चीनी संविधान और राष्ट्रीयता संबंधी कानून के अनुकूल तिब्बत के लिये सिर्फ ''वास्तविक स्वायत्तता'' की मांग कर रहा है। वह चीन के अंदर प्राप्त तथाकथित स्वायत्तता से संतुष्ट नहीं है।

प्रो. श्यामनाथ मिश्र
पत्रकार एवं अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग
राजकीय महाविद्यालय, तिजारा (राजस्थान)
मो.-9079352370, 8764060406
E-mail & Facebook: - shyamnathji@gmail.com

❖ यूनाइटेड स्टेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ पीस यूथ लीडर्स' के साथ संवाद का पहला दिन

dalailama.com २२ सितंबर २०२२

परम पवन दलाई लामा के साथ डेविड यांग।

थेगछेन छोलिंग, धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश। आज २२ सितंबर की सुबह परम पावन दलाई लामा 'युनाइटेड स्टेट्स इंस्टिट्यूट ऑफ़ पीस (यूएसआईपी)' के युवा नेताओं और शांति कार्यकर्ताओं से मिलने के लिए अपने आवास के श्रोता कक्ष में पधारे। सबसे पहले उन्होंने सावधानीपूर्वक उनके चेहरों पर गौर किया और फिर गर्मजोशी से'गुड मार्निंग' बोलकरउनका अभिवादन किया।

बैठक के मॉडरेटर यूएसआईपी में एप्लाइड कॉन्फ्लिक्ट ट्रांसफॉर्मेशन के उपाध्यक्ष डेविड यांग ने घोषणा की कि परम पावन और यूएसआईपी प्रतिनिधियों के बीच यह सातवीं बातचीत है। उन्होंने बताया कि आज और कल परम पावन १२ संघर्षरत क्षेत्रों के २६ युवा नेताओं के साथ बातचीत करेंगे। उन्होंने उल्लेख किया कि पिछले दो वर्षो से यह बैठक ऑनलाइन आभासी संवाद के रूप में चल रहा था, लेकिन अब यह वापस शारीरिक रूप में आ गया है जिससे सभी खुश हैं।

कहानी सुनाना युवा नेताओं के प्रशिक्षण का हिस्सा होता है और यांग ने स्पष्ट किया कि वे परम पावन को बताना चाहते हैं कि कैसे युद्धग्रस्त क्षेत्र के बच्चे शांति सैनिक बन सकते हैं। उन्होंने बताया कि इस बैठक के दौरान चार विषयों पर चर्चा होगी। वे हैं-परस्पर संबंध, करुणा, आंतरिक शांति तथा समता और न्याय।

दक्षिण सूडान के कुओल ने बातचीत की शुरुआत की। एक बाल सैनिक के तौर पर युद्ध में भाग ले चुके कुओल अपने उस कड़वे अनुभव का उपयोग यह सुनिश्चित करने के लिए कर रहे हैं कि आगे से कोई भी बच्चा कम उम्र में बंदूक न उठाए। उन्होंने उस समय को याद किया,जब उनके देश में युद्ध चरम पर था। उस समय गांवों में कोई पुरुष नहीं बचा था, केवल महिलाएं और बच्चे थे। जिस किसी परिवार में दो लड़के होते थे तो उनमें से एक को सैनिक बना लिया जाता था। अब वह उन्हें शिक्षा और अन्य अवसरों तक पहुंच देना चाहते हैं।

सीरिया की रूबी ने महसूस किया कि शांति स्थापित करने के लिए मानवशास्त्रीय और नृतत्ववंशीय संवेदनशीलता की आवश्यकता होती है और उसी के अनुसार अध्ययन करना होता है। वह शांति-निर्माण, न्याय, महिलाओं के अधिकार और जलवायु संबंधी मुद्दों से संबंधित परियोजनाओं पर काम कर रही हैं। उन्होंने अपने इस अहसास के बारे में बात की कि पुरुष और महिला समान रूप से सक्षम हैं, लेकिन दोनों को शक्तिशाली और बहादूर होने की आवश्यकता है।

कोलंबिया की एंजेला एक मनोवैज्ञानिक हैं, जिन्होंने किशोरों और वयस्कों के साथ अनौपचारिक शिक्षा पद्धतियों, कार्यशालाओं, नेतृत्व और सॉफ्ट-कौशल विकास पर ध्यान केंद्रित किया है। उन्होंने संघर्ष प्रभावित क्षेत्रों के लोगों को मजबूत और बहादुर होने और समाधान का हिस्सा बनने की आवश्यकता पर भी बल दिया।

सोमालिया के मोहम्मद गरीबी उन्मूलन और स्थायी शांति के निर्माण के उपकरण के रूप में सामाजिक नवाचार, शिक्षा, रोजगार और उद्यमिता पर केंद्रित काम कर रहे हैं। उन्होंने अपने जीवन में आए महत्वपूर्ण बदलाव की घटना को याद किया, जब उनका सामना दो बंदूकधारियों से हुआ। उनमें से एक उनका पूर्व सहपाठी ही था। उन्होंने ऐसे लोगों को कौशल प्रदान करने के लिए एक शिक्षक बनने का संकल्प लिया जो उन्हें रोजगार दिलाने और शांतिपूर्ण सोमालिया के निर्माण में योगदान करने के लायक बनाएगा।

नाइजीरिया से मोजिसोला लिंग, शांति-निर्माण और मानवाधिकारों के क्षेत्र में सक्रिय रूप से संलग्न है। वह किस्सागोई, अभिनय और संवाद के माध्यम से महिलाओं, युवाओं, शांति और सुरक्षा पर कार्यशालाओं की सुविधा प्रदान करती हैं। उन्होंने अपनी मां द्वारा झेली जाने वाली परेशानियों के साथ ही महिलाओं द्वारा एक-दूसरे की मदद और पूर्वाग्रह और दबाव का सामना करने में एक-दूसरे की मदद करने के लिए एक क्लब बनाने के अपने प्रयासों का वर्णन किया।

कोलंबिया के लियोनार्डो कला, वैकल्पिक विकास और निरंतर सीखने के क्षेत्र में काम करते हैं। उन्होंने हस्तलिखित पत्रों के आदान-प्रदान के माध्यम से पूर्व एफएआरसी लड़ाकों और आम नागरिकों को एक साथ लाने का काम किया

है। स्कूल के एक कमरे में खुद को अकेला पाकर उन्हें इस इस बात का महत्व समझ में आया कि कोई भी पीछे न छूटने पाए या बिल्कुल छूटा हुआ महसूस नहीं करे। वे कहते हैं कि यह सुनिश्चित करना अहम है कि लोग महसूस करें कि वे एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं।

प्रस्तुतियों के पहले सेट पर प्रतिक्रिया देते हुए परम पावन ने घोषणा की:

"हमें एक बेहतर शांतिपूर्ण विश्व और एक खुशहाल मानव समाज बनाने के लिए प्रयास करना होगा। हम नस्ल, राष्ट्रीयता और धर्म के संदर्भ में अपने बीच के भेदों की पहचान कर सकते हैं।लेकिन बेहतर होगा कि हम समग्र रूप से मानवता के बारे में सोचें। हम सबका समान अधिकार है। हम सभी एक मां से पैदा हुए हैं और हममें से ज्यादातर लोग मां का दूध पी चुके हैं। हम अपने जीवन की शुरुआत से मां की दया पर निर्भर हैं। सौहार्दता एक उपयुक्त प्रतिक्रिया है।

आधुनिक शिक्षा आंतरिक मूल्यों के बजाय भौतिक लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित करती है। ऐसा लगता है कि यह इस बात पर जोर देने कि हम अनिवार्य रूप से वही हैं और हमें एक साथ रहना है के बजाय'हम'और 'उन'की भावना को प्रोत्साहित करती हैं।

हम सबकी दो आंखें, एक नाक, एक मुंह है। अगर हममें से किसी एक की तीन आंखें होंतो यह आश्चर्य की बात होगी। अगर हम अपने दिमाग की बात करें, तो वे भी उतने ही जटिल होंगे। इसलिए हमें आपस में भाई-बहन होने की भावना को प्रोत्साहित और मजबूत करना होगा।

जैसा कि मैंने कहा कि हम सभी एक ही तरह से पैदा हुए हैंऔर अंत में हम सभी को एक ही तरह से प्रस्थान करना है। जब ऐसा हैतो इस तरह का समारोह करना महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि महत्वपूर्ण यह है कि हमारे आसपास रिश्तेदारों और दोस्तों का स्नेह रहे। जैसा कि मैंने पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह से कहा था कि मैं और १५ या २० साल जीने की उम्मीद करता हूं।लेकिन जब मैं मरूं तो मैं भारत में स्वतंत्र और दोस्तों से घिरा होना पसंद करूंगा, न कि कठोर चीनी कम्युनिस्ट अधिकारियों से।

स्वतंत्रता हमारे जीवन में महत्वपूर्ण है। हमें अपने दिमाग लगाने में सक्षम होने के लिए स्वतंत्र होना चाहिए, हमेशा 'क्यो' जैसा सवाल पूछने में सक्षम होना चाहिए। इस दृष्टि से अधिनायकवादी व्यवस्था पूर्णतया प्रतिकूल है। यह स्वतंत्रता ही है जो सौहार्दता और करुणा को बढ़ावा देती है, जो आंतरिक शांति की ओर ले जाती है। जब आप सौहार्दपूर्ण होते हैं तो डरने का कोई आधार नहीं होता है। डर मन के लिए बुरा है और बहुत आसानी से क्रोध की ओर ले जाता है। और क्रोध मन की शांति का दुश्मन है।

मैं करुणा की साधना करता हूं।इसलिए मैं जहां भी जाता हूं, मुस्कुराता रहता हूं और खुशी महसूस करता हूं। मनुष्य के रूप में हमें यह पता लगाना होगा कि शांति के साथ कैसे रहना है।

यह पूछे जाने पर कि वह क्या चीज है जिससे एक अच्छा नेता तैयार होता है, परम पावन ने निर्वाचित नेतृत्व के लाभों पर बल दिया। यह पूछे जाने पर कि क्रोध पर कैसे काबू पाया जाए, उन्होंने उन परिस्थितियों का परीक्षण करने का सुझाव दिया,जो आपको ऐसा करने के लिए प्रेरित करती हैं। उन्होंने व्यापक, दीर्घकालिक दृष्टिकोण अपनाने की सिफारिश की। उनसे इस बात बात के लिए सुझाव देने को कहा गया कि कैसे पुरुष और महिलाएं एक साथ रहना सीख सकते हैं।उन्होंने बस इतना ही कहा कि पुरुषों को महिलाओं की जरूरत है और महिलाओं को पुरुषों की जरूरत है। इतना सुनते ही सभी हंस पड़े।

किस्सागो के दूसरे समूह ने करुणा के बारे में बात की। दुनिया के विभिन्न हिस्सों में शांति-निर्माण, समस्या समाधान, सरकार और लोकतंत्र को मजबूत करने के मुद्दों पर योगदान करनेवाले कोलंबिया के सेबेस्टियनने एक लड़ाके से सामना होने का वाकया याद किया। उन्होंने वर्णन किया कि कैसे एक छोटी लड़की के प्रकट होने पर उनके मन से शत्रुतापूर्ण भावनाएंखत्म हो गईं और उनके प्रतिद्वंद्वीने उसे उठाकर गले लगा लिया।

इथियोपिया की हेलिनायुवा नेताओं को शांति परियोजनाओं में भाग लेने के लिए प्रेरित करना चाहती हैं और कमजोर समुदायों में जोखिम और असमानता को कम करने के लिए उन्हें सशक्त बनाना चाहती हैं। हेलिना ने सुझाव दिया कि परिवर्तन लाने के लिए हमें मानवता की रक्षा करनी होगी।

परम पावन ने यूरोपीय संघ (ईयू) की भावना की अपनी चिरपरिचित प्रशंसा को व्यक्त करने के लिए हस्तक्षेप किया। वह इस बात से बहुत प्रभावित हैं कि फ्रांस और जर्मनी के बीच सदियों के संघर्ष के बावजूदद्वितीय विश्व युद्ध के बाद एडेनॉयर और डी गॉल ने यूरोपीय संघ की स्थापना की। तब से संघ के सदस्यों के बीच कोई हिंसा नहीं हुई है। उन्होंने सुझाव दिया कि बाकी दुनिया शांति की खोज में इस उदाहरण का अनुसरण कर सकती है। उन्होंने कहा कि सबसे महत्वपूर्ण बात आंतरिक शांति प्राप्त करना है। लेकिन आप किसी दुकान में मन की शांति नहीं खरीद सकते। यह ऐसा कुछ नहीं है जिसे किसी कारखाने में उत्पादित किया जा सकता है।

वेनेजुएला की अन्ना ने बताया कि वह अपने देश की सड़कों पर टैंकों को देखकर किस तरह से आक्रोशित हो गई थी। उन्होंने अपनी सुरक्षा के लिए केवल लकड़ी की ढाल बनाई और उन्हें चुनौती दी। वह काफी अकेला महसूस कर रही थी, इतना विनाश देखकर व्यथित थी। एक बार एक सुरक्षित स्थान पर आ जाने के बाद उन्होंने खुद से पूछा कि ऐसा कैसे हो सकता है। और अब वह शांति के लिए काम करने वाले युवाओं, विशेषकर महिलाओं की मदद करने के लिए समर्पित है।

अद्भुत, परम पावन ने उत्तर दिया। हम सभी खुश रहना चाहते हैं और शांति से रहना चाहते हैं। लेकिन हमें पूरी मानवता को ध्यान में रखते हुए इसके लिए काम करना होगा।

उन्होंने कहा, 'हमें पूरी तरह से विसैन्यीकृत दुनिया को अपना लक्ष्य बनाने की जरूरत है। मैं तिब्बत से हूं, जहां का सब कुछ चीनी कम्युनिस्टों के कड़े नियंत्रण में है। लेकिन तिब्बती भावना प्रबल है और हमने नालंदा परंपरा को संरक्षित रखा है। हम बंदूकों पर निर्भर रहने के बजाय करुणा का उपयोग करते हैं। बुद्ध ने क्षमा और करुणा के बारे में जो शिक्षा दी, उसमें साठ लाख तिब्बतियों ने अपना विश्वास जताया है।

'और क्योंकि जलवायु परिवर्तन बहुत गंभीर मुद्दा है, इसलिए हमें पारिस्थितिकी पर भी ध्यान देना चाहिए।'

दक्षिण सूडान के डेनिस जल प्रबंधन, प्रदूषण,जलवायु परिवर्तन सहित पर्यावरण और शांति-निर्माण पर रिपोर्टिंग करने वाले पत्रकार के रूप में काम करते हैं। उन्होंने बताया कि उन्होंने मानवाधिकारों के इतने उल्लंघन देखे हैं।लेकिन उन्हें मार्टिन लूथर किंग जूनियर, नेल्सन मंडेला और महात्मा गांधी जैसे लोगों का उदाहरण प्रेरित करता है,जिन्होंने घृणा और कष्टों से मुक्त शांतिपूर्ण समाज बनाने के लिए काम किया।

दक्षिण सूडान की ही न्याबोथशांति, लिंग, संस्कृति और इतिहास पर विशेष ध्यान देने के साथ सामाजिक मुद्दों के बारे में बोलती हैं। वह साक्ष्य-आधारित तर्कों और शांतिपूर्ण परिवर्तन के अभियान के माध्यम से जीवन को बदलने की कोशिश कर रही हैं। जब २०१३में संघर्ष छिड़ गयातो वह युगांडा में सीमा पार कर गई और एक बुजुर्ग व्यक्ति से मिलीं,जिन्होंने उसे बताया कि उन्हें लग रहा है कि वह हमेशा भाग रहे हैं। जब वह वापस लौटी तो वह उस महिला की कहानी सुनकर बहुत व्यथित हो गई, जिसे परिवार द्वारा उसके लिए चुने गए

व्यक्ति से शादी करने से इनकार करने पर भाई ने पीट-पीट कर मार डाला था। उन्हें इस बारे में कुछ करने की सख्त जरूरत महसूस हुई,भागने की नहीं। अब वह इस बात को लेकर दृढ़ है कि महिलाओं और लड़कियों को अपनी पसंद चुनने का अधिकार होना चाहिए।

नाइजीरिया के नोरल ने अपने नौवें जन्मदिन को याद किया, जब उनकी मां ने उनके लिए पसंदीदा चावल का व्यंजन तैयार किया था। उसी दिन तीन लोगों ने अंदर घुसकर उनके सामने ही मां के साथ बलात्कार किया और मां की हत्या कर दी। उन्होंने वर्णन किया कि उस समय जो हुआ उससे उबरना२० साल बाद भी कितना कठिन है।लेकिन वह उस दिन को देखने के लिए प्रतिबद्ध है कि महिलाएं हिंसा और बलात्कार की शिकार न बनाई जाएं।

डेविड यांग के यह पूछने पर कि वे अपने जीवन में करुणा को कैसे बनाए रख सकते हैं, परम पावन ने घोषणा की:

“मेरा मानना है कि मनुष्य के रूप में हम सभी मौलिक रूप से दयालु हैं। हमें मानवीय मूल्यों पर आधारित एक ऐसी दुनिया- एक विसैन्यीकृत दुनिया का निर्माण करना है। एक ऐसी दुनिया, जो हथियारों के इस्तेमाल पर निर्भर नहीं होगी। जब लोग लड़ते हैं और मरते हैं तो उनके दिमाग में शांति नहीं होती है, लेकिन हम करुणा पर आधारित दुनिया के निर्माण की कल्पना कर सकते हैं।‘

यह पूछे जाने पर कि शांति लाने के लिए किन गुणों की आवश्यकता है, परम पावन ने टिप्पणी की:

‘मैं एक बौद्ध हूं और जैसे ही मैं हर सुबह उठता हूं, मैं खुद को याद दिलाता हूं कि सभी इंसान मेरे जैसे ही हैं- हम सभी खुश रहना चाहते हैं। मैं अपने जीवन का उपयोग यह सुनिश्चित करने के लिए करता हूं कि अन्य प्राणी खुश रहें। यह करुणा है जो मन की शांति लाती है, क्रोध और घृणा नहीं,इसलिए हमें अपने भाइयों और बहनों के रूप में पूरी मानवता पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है।‘

परम पावन ने नकारात्मक अनुभवों को अलग रखने और सकारात्मक लक्ष्य निर्धारित करने का उपदेश दिया। उन्होंने कहा कि लोगों को अधिक दयालु होने की शिक्षा देना संभव है क्योंकि हम सभी के पास अपने जीवन की शुरुआत से ही करुणा का बीज है- हमें बस इसे पोषित करना है। मुख्य कारक सौहार्दता का विकास करना है।

डेविड यांग ने सत्र का सार प्रस्तुत किया जो अपनेपन और परिवार और सामुदायिक बंधनों की गर्मजोशी को अभिव्यक्त करने वाला था।

परम पावन ने टिप्पणी की, ‘मैं ऐसे लोगों से मिलकर खुद को सम्मानित महसूस कर रहा हूं जिनका भविष्य उनके आगे है। हम दिन-प्रतिदिन कैसे जीते हैं, यह हमारे भविष्य को प्रभावित करता है। मैं दोहराता हूं कि सौहार्दता प्रमुख कारक है। मैं हमेशा इसके बारे में सोचता हूं क्योंकि यह सौहार्दता ही है जो हमें मन की शांति देती है। कल फिर मिलते हैं।‘

❖ प्रधानमंत्री मोदी को जन्मदिन की बधाई

dalailama.com १७ सितंबर, २०२२

परम पवन दलाई लामा और भारतीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी।

थेगछेन छोलिंग, धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश, भारत। भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के ७०वें जन्मदिन के अवसर पर परम पावन दलाई लामा ने उनके निरंतर अच्छे स्वास्थ्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं दीं और उनके लिए प्रार्थना कीं।

परम पावन ने लिखा,‘यह अद्भुत है कि भारत ने सफलतापूर्वक कोरोनावायरस महामारी से उत्पन्न चुनौतियों का सामना किया है। यद्यपि हमने इसका पूर्ण अंत नहीं देखा है लेकिनभारत भविष्य में इसी तरह की चुनौतियों का सामना करने के लिए आज बेहतर स्थिति में है।

भारत में सबसे लंबे समय तक रहने वाले अतिथि के रूप में मैंने इसके विकास को अपनी नजरों से देखा है। अब तो देश एक उभरती हुई आर्थिक शक्ति और विज्ञान और प्रौद्योगिकी में भी अग्रणी है।

भारत की मजबूत लोकतांत्रिक नींव के कारण यहां शांति और स्थिरता है। भारत की आबादी में युवाओं की अधिकता देश की एक ऐसी संपत्ति है जो इसके आगे के विकास और सकारात्मक आकांक्षाओं को पूरा करने में सक्षम होगी। मुझे यह कहते हुए प्रसन्नता हो रही है कि भारत विश्व में अपना उचित स्थान ग्रहण करने के लिए तैयार है।

परम पावन ने आगे लिखा,‘जिस तरह से महात्मा गांधी ने ‘अहिंसा’की सदियों पुरानी परंपरा को दुनिया भर में प्रचारित किया, उसके लिए मैं उनकी बहुत प्रशंसा करता हूं। मैं अपनी ओर से इस बात को दोहरा सकता हूं कि जहां भी संभव हो, इस सिद्धांत को बढ़ावा देने के अलावामैं ‘करुणा’ की शक्ति के बारे में अधिक जागरूकता पैदा करने के लिए प्रतिबद्ध रहूंगा, ताकि हम सभी को एक खुशहाल और सार्थक जीवन जीने में मदद मिल सके। ये मूल्य भारतीय परंपरा के खजाने हैं।

परम पावन ने धन्यवाद के साथ अपना पत्र समाप्त करते हुए लिखा,‘एक बार फिरमैं इस अवसर पर भारत की सरकार और लोगों के प्रति गहरी कृतज्ञता व्यक्त करना चाहता हूं कि हम तिब्बतियों ने १९५९में यहां निर्वासित होने के लिए मजबूर होने के बाद से गर्मजोशी और उदार आतिथ्य का आनंद लिया है।‘

❖ सीटीए ने तिब्बती लोकतंत्र दिवस की ६२वीं वर्षगांठ मनाई

tibet.net, ०२ सितंबर २०२२

धर्मशाला। केंद्रीय तिब्बती प्रशासन **(सीटीए)** ने ६२वें तिब्बती लोकतंत्र दिवस के अवसर पर आज ०२ सितंबर कीसुबह १० बजे त्सुगलकखांग में एक संक्षिप्त समारोह का आयोजन किया।

मुख्य अतिथि विधायक श्री विशाल नेहरिया की अध्यक्षता में समारोह का नेतृत्व कार्यवाहक सिक्योंग कालोन थरलाम डोल्मा चांगरा, कालोन ग्यारी डोल्मा, निर्वासित तिब्बती संसद के अध्यक्ष खेंपो सोनम तेनफेल, उपाध्यक्ष डोल्मा त्सेरिंग, कार्यवाहक मुख्य न्यायिक आयुक्त कर्मा दादुल के अलावा विभागों के सचिवों और अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने किया।

कार्यक्रम का उद्घाटन कार्यवाहक सिक्योंग द्वारा तिब्बती ध्वज फहराने के साथ-साथ तिब्बती राष्ट्रगान और भारतीय राष्ट्रगान से किया गया।

औपचारिक परंपरा का पालन करते हुएटीपा ने लोकतंत्र गीत के गायन में सभा का नेतृत्व किया।

लोकतांत्रिक प्रक्रिया के तहत कशाग और न्यायपालिका के विकास पर बोलते हुए कार्यवाहक सिक्योंग ने लोकतंत्र दिवस पर कशाग का बयान पढ़ा।

उन्होंने कहा, 'कशाग की स्थापना सातवें दलाई लामा केलसांग ग्यात्सो द्वारा की गई थी, जब उन्होंने १७५१में तिब्बत का आध्यात्मिक और राजनीतिक नेतृत्व ग्रहण किया था। उस समय कशाग तीन सामान्य नागरिक मंत्री और एक भिक्षु मंत्री से बना था, जिसकी संरचना में क्रमिक परिवर्तन हुए हैं। पहले राजा न्यात्री त्सेनपो से गादेन फोडंग तक तिब्बती सरकार की वैधता की निर्बाध निरंतरता का प्रतीक सातवें दलाई लामा द्वारा तत्कालीन कशाग को आधिकारिक मुहर, कथम शिशी डिकी सौंपने की परंपरा है। कशाग परिवर्तन के दौरान मुहर सौंपने की परंपरा अब तक जारी है।'

कालोन थर्लमा डोल्मा तिब्बती राष्ट्रीय ध्वज फहराते हुए।

इसके अलावा, उन्होंने भारत में निर्वासित सरकार की स्थापना से लेकर परम पावन चौदहवें दलाई लामा द्वारा लोकप्रिय निर्वाचित नेतृत्व को शक्तियों के हस्तांतरण तक तिब्बती लोकतंत्र के महत्वपूर्ण पड़ावों पर भी प्रकाश डाला।

कार्यवाहक सिक्योंग ने हाल ही में यानि,२३ जून २०२२ को अमेरिकी कांग्रेस की सुनवाई को लेकर प्रसन्नता जताई,जो तिब्बत की ऐतिहासिक स्थिति पर विशेषज्ञों की अपनी तरह की पहली सुनवाई थी। उन्होंने १३ जुलाई २०२२को 'तिब्बत-चीन संघर्ष निदान को बढ़ावा देने के लिए प्रस्ताव अधिनियम (द प्रोमोटिंग ए रिजोल्यूशन टू द तिब्बत- चाइना कंफ्लिक्ट ऐक्ट) के लिए अमेरिकी प्रतिनिधि सभा सदस्यों- मैकगवर्न और मैकक़ॉल की भी सराहना की। उन्होंने कहा,'यह न केवल केंद्रीय तिब्बती प्रशासन की मध्यम-मार्ग नीति के अनुरूप है, बल्कि बातचीत के माध्यम से चीन-तिब्बत संघर्ष को हल करने के हमारे प्रयासों का लाभ उठाने में भी मदद करता है। हम यूरोप में समान विचारधारा वाले देशों को भी ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित करने के प्रयास करना जारी रखेंगे।'

इसके बाद, निर्वासित तिब्बती संसद के स्पीकर खेंपो सोनम तेनफेल ने इस दिन के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा, 'शासन की लोकतांत्रिक व्यवस्था इस धारणा पर आधारित है कि किसी व्यक्ति की सामाजिक स्थिति के आधार पर उसके साथ कोई भेदभावपूर्ण बर्ताव नहीं किया जाना चाहिए। इसमें प्रश्न यह नहीं होना चाहिए कि वह कितना शक्तिशाली है या कमजोर, अमीर है या गरीब, वह व्यक्ति पुरुष है या महिलाया उसके वंश और जाति क्या है। बल्कि, यह एक ऐसी व्यवस्था है जो समाज को समग्रता में या एकसमान रूप से देखती है, जिसमें सभी को समान रूप से देखा जाता है और प्राथमिक ध्यान आम जनता की इच्छा के आधार पर कार्य करने पर दिया जाता है।'

इस तरह की एक महान प्रणाली को संस्थागत रूप देने के उद्देश्य सेदुनिया भर के देशों में युद्ध, विद्रोह और संघर्ष जैसे बहुत सारे विवाद हुए हैं। इस तरह की उथल-पुथल में जीत या हार से नतीजे तय होते हैं। इस तरह के विभिन्न माध्यमों से लोकप्रिय इच्छा शक्ति के द्वारा शासन प्रणाली की प्राप्ति की प्रवृत्ति आज भीपूरी दुनिया में बनी हुई है।

लेकिन हमारे लोकतंत्र के विकास में ऐसा कुछ नहीं हुआ। बल्कि यह बिना किसी अशांति के घटित हुआ, क्योंकि यह हमें परम पावन दलाई लामा द्वारा खुशी के साथ और तिब्बती लोगों के प्रति उनके महान स्नेह के कारण उपहार में दिया गया है। निर्वासित तिब्बती लोगों की लोकतांत्रिक व्यवस्था के विकास के पाठ्यक्रम से यह सब बहुत स्पष्ट है।

इसी प्रकार मुख्य अतिथि विधायक विशाल नेहरिया ने निर्वासन में फलते-फूलते तिब्बती समुदाय और अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के माध्यम से धर्मशाला को एक अंतरराष्ट्रीय पर्यटन स्थल बनाने में उसकी भूमिका की सराहना की।

इसके बाद, मेवेन त्सुगलग पेटोएन, अपर टीसीवी और योंगलिंग स्कूल के छात्रों ने उपस्थित दर्शकों के समक्ष सांस्कृतिक कार्यक्रम का प्रदर्शन किया। दर्शकों के लिए टीपा ने भी अपनी प्रस्तुति दी।

सिक्योंग छात्रवृत्ति विजेताओं को प्रमाण-पत्र प्रदान करने की वार्षिक परंपरा के अनुसार, कार्यवाहक सिक्योंग ने बारहवीं कक्षा की अखिल भारतीय परीक्षा के टॉपर्स, डॉक्टरेट शोधकर्ताओं और गाडेन फोडंग छात्रवृत्ति विजेताओं को

प्रमाण-पत्र प्रदान किए।

इसी तरह, स्पीकर ने सीटीए में पच्चीस वर्ष की सेवा पूरी कर चुके सिविल सेवा कर्मचारियों को उत्कृष्टता पुरस्कार प्रदान किया। उन्होंने गृह विभाग की पहल यस कार्यक्रम के विजेताओं को भी सम्मानित किया।

कार्यक्रम का समापन कार्यवाहक मुख्य न्यायिक आयुक्त द्वारा प्रतिनिधि टी.जी.आर्या के 'हार्नेसिंग द ड्रैगन्स फ्यूम' के तिब्बती अनुवाद के विमोचन के साथ हुआ।

❖ सीटीए ने तिब्बत में प्राकृतिक आपदा और कोविडप्रभावित तिब्बतियों के लिए प्रार्थना सेवा का आयोजन किया

tibet.net, ०६ सितंबर २०२२

प्राकृतिक आपदा और कोविड प्रभावित तिब्बतियों के लिए प्रार्थना में निर्वासित तिब्बती सरकार।

धर्मशाला। केंद्रीय तिब्बती प्रशासन ने आज ०६ सितंबर को सिक्योंग हॉल में एक प्रार्थना सभा आयोजित की।इसमें प्राकृतिक आपदाओं और कोविड-१९ के कारण तिब्बत में तिब्बतियों की मृत्यु पर एकजुटता व्यक्त की गई और शोक व्यक्त किया गया।

तिब्बत के भीतर पांच तिब्बतियों की बाढ़ के कारण मृत्यु हो गई थी, हालांकि संपत्ति और पशुधन को कितना नुकसान हुआ है इसकी कोई जानकारी नहीं दी गई है। सभा को संबोधित करते हुए सिक्योंग ने कहा, 'तिब्बत में हाल ही में आए भूकंप से मरने वालों की संख्या यह नहीं बताती है कि उनमें से कितने तिब्बती थे और कितने चीनी थे। अलग राष्ट्रीयता के बावजूद, हम प्राकृतिक आपदा से प्रभावित सभी लोगों के लिए एकजुटता व्यक्त करते हैं, भूकंप की तीव्रता रिक्टर पैमाने पर ६.८ दर्ज की गई है।

कड़े कोविड-प्रतिबंधों पर ध्यान देते हुए, सिक्योंग ने कहा, 'कोविड प्रतिबंधों ने तिब्बत के अंदर तिब्बतियों की कठिनाई को बढ़ा दिया है। हालांकि हम हताहतों की संख्या का पता नहीं लगा सकते हैं, लेकिनमैं सभी प्रभावित तिब्बतियों और चीनियों के शीघ्र स्वस्थ होने और कष्टों से मुक्त होने की कामना करता हूं। हमने धर्म विभाग के माध्यम से बस्तियों को इस संबंध में नियमित रूप से प्रार्थना करने का निर्देश जारी किया है।'

प्रार्थना सभा के बाद सीटीए के सभी कार्यालय दिनभर के लिए बंद रहे।

❖ तिब्बत के खाम करज़े में पुलिस की यातना से दो तिब्बतियों की मौत

tibet.net,३० सितंबर, २०२२

न्गोडुप छेरिंग।

धर्मशाला। चीनी अधिकारियों ने २८ सितंबर २०२२ को सिचुआन प्रांत में शामिल खाम कर्ज़ (चीनी: गांज़ी) के डार्टसेडो (चीनी: कांगडिंग) काउंटी स्थित एक वृद्धाश्रम में कथित तौर पर जाने और भोजन और खाद्य पदार्थ उपलब्ध कराने के आरोप में गिरफ्तार एक तिब्बती व्यक्ति की पीट-पीट कर हत्या कर दी। निर्वासन में सक्रिय एक मीडिया संस्थान ने सूचना दी है कि चीनी पुलिस ने कथित तौर पर उस व्यक्ति को बुरी तरह पीटा, जिसके परिणामस्वरूप अगले दिन उसकी मृत्यु हो गई।

२७ सितंबर २०२२ की सुबह वृद्धाश्रम से लौटने के बाद कुछ पुलिस अधिकारियों ने न्गोडुप छेरिंग को अचानक गिरफ्तार कर लिया। तिब्बत टाइम्स की रिपोर्ट के अनुसार, उन्हें घंटों तक स्थानीय पुलिस स्टेशन में पीटा गया और पूछताछ की गई।

न्गोडुप के वृद्धाश्रम जाने और बुजुर्गों को भोजन और अन्य चीजों को पहुंचाने की घटना को पुलिस ने बुजुर्गों की देखभाल के लिए जिम्मेदार सरकारी अधिकारियों के खिलाफ देखा है। इसके अलावा, पुलिस ने न्गोडुप का उपहास उड़ाया और दावा किया कि चूंकि सरकारी अधिकारी नियमित रूप से बुजुर्गों को भोजन और अन्य आवश्यकताएं प्रदान कर रहे हैं, इसलिए किसी 'बाहरी' को मदद करने की कोई आवश्यकता नहीं है। आरोपी द्वारा 'चेहरे पर अनुचित भाव' प्रदर्शित करने का आरोप लगाते हुएअधिकारियों ने उसे बुरी तरह से पीटा,जिससे वह खड़े होने में भी अक्षम हो गया। अगले दिन सुबह थाने में उसकी मौत हो गई।

तिब्बत टाइम्स की रिपोर्ट मेंइस बारे में और कोई जानकारी नहीं है कि क्या न्गोडुप का शव परिवार को सौंप दिया गया है या नहीं। न्गोडुप छेरिंग अपने परिवार के पालन-पोषण के लिए और जीविका के लिए टैक्सी चलाता था। उसके परिवार में उसकी७८वर्षीया मां ल्हाकी, उनकी पत्नी युत्सो और दो बच्चे शामिल हैं।

सेर्थर में धार्मिक साधना करते गिरफ्तार किए गए पांच में से एक तिब्बती की मौत

कर्ज़े (गांज़ी) तिब्बती स्वायत्त प्रिफेक्चर के सेर्थर (चीनी: सेडा) काउंटीमें धार्मिक गतिविधियों में शामिल होने के आरोप में चीनी पुलिस ने २६ अगस्त, २०२२ को ५२ वर्षीय चुकधर (तिब्बती:) को हिरासत में लेकर इतनी कठोर यातना दी कि उनकी मृत्यु हो गई। तिब्बत टाइम्स और सीटीए के सुरक्षा विभाग ने इस खबर की पुष्टि की है।

गिरफ्तार किए गए अन्य तिब्बतियों में गेलो, छेदो, भामो और कोरी हैं, जिन्हें कर्ज़े काउंटी जेल में रखा गया है। रिपोर्ट के अनुसार, पांचों तिब्बतियों को कथित तौर पर २४ अगस्त को

एक धार्मिक समारोह का आयोजन करने और संगसोल (जुनिपर को जलाने), बौद्ध मणि पत्थरों को ढेर करने और सार्वजनिक रूप से प्रार्थना करने के आरोप में गिरफ्तार किया गया था। रिपोर्ट में कहा गया है कि उनकी उदारता, जिम्मेदारी और वफादारी के लिए उनके शहर में 'नोबल फाइव' के नाम से जाना जाता है।पांचों का यह समूह स्थानीय तिब्बतियों के अनुरोध पर अक्सर शहर की धार्मिक गतिविधियों और प्रार्थना सेवाओं का आयोजन करता है।

यह भी बताया गया है कि गिरफ्तार आरोपियों को अपने परिवारों से मिलने से वंचित कर दिया गया और २५ अगस्त को इन लोगों को भोजन और खाने की चीजें भी नहीं दी गई थी। २६ अगस्त कोचुकधर के परिवार को सूचित किया गया कि जेल में उनका निधन हो गया है और वे आकर उनका शव ले जाएं। अधिकारियों ने कहा कि चुकधर के शव परिवार को तभी सौंपा जाएगा, जब उनका परिवार एक आधिकारिक पत्र पर हस्ताक्षर कर देगा, जिसमें लिखा होगा कि उनकी मौत पुलिस प्रताड़ना के कारण नहीं हुई है। चुकधर के परिवार का कहना है कि वह पूरी तरह से स्वस्थ थे, जबकिअधिकारियों ने कहा कि उनकी 'मृत्यु अचानक' हुई है।

सूत्र ने तिब्बत टाइम्स को बताया, 'सेर्थर काउंटी पुलिस ने मृतक के परिवार को १,००,००० युआन (लगभग १४,११३ डॉलर)) और हर साल परिवार के प्रत्येक सदस्य को लिए अतिरिक्त १०,००० युआन का मुआवजा देने का आश्वासन दिया है। सूत्र ने कहा कि लेकिन उन्हें अभी तक मुआवजा नहीं मिला है। असल में यह परिवार को हिरासत से शव ले जाने के लिए राजी करने के लिए सिर्फ एक झूठा वादा है।'

रिपोर्ट के अनुसार, पांच तिब्बतियों को २४ अगस्त को गिरफ्तार किया गया था और उन्हें एक सप्ताह के लिए सेर्थर काउंटी जेल में रखा गया था। ३१अगस्त को उन्हें कर्ज़े काउंटी जेल में स्थानांतरित करने का मतलब है कि उन्हें सजा भी सुनाई जा सकती है। हाल तक, कैदियों को उनके अपने काउंटी जेलों में ही रखा जा रहा था, सिवाय उन कैदियों को जिन्हें सजा सुनाई जानी है। लेकिन अब आरोपियों को अधिकारी अपनी काउंटी की जेल में केवल कुछ दिनों के लिए रखते हैं और फिर उन्हें कहीं और स्थानांतरित कर दिया जाता है।

चुकधर कर्ज़े तिब्बती स्वायत्त प्रिफेक्चर के सेर्थर काउंटी के अबो काइल रिघो तिब्बती गांव-खाकोर टाउनशिप (चीनी: केगुओ) के रहनेवाले थे। वह अपने परिवार के एकमात्र कमाने वाले सदस्य थे। उनके परिवार में ७१वर्षीय पिता थुपवो, ७५ वर्षीया मां,पत्नी और बच्चे हैं।

❖ तिब्बतियों ने चीन की शून्य कोविडनीति के तहत कठोर शर्तो का खुलासा किया

(सूत्रों ने कहा कि चीनी सरकार ने ल्हासा में तालाबंदी का आदेश दिया, लेकिन इसके लिए पहले से तैयारी नहीं की)

rfa.org / सोनम ल्हामो, १५ सितंबर २०२२

तिब्बती लोग चीनी सरकार की शून्य कोविडनीति को लेकर अपनी कुंठाओं को निकालने के लिए सोशल मीडिया का सहारा ले रहे हैं। इस क्षेत्र के सूत्रों ने आरएफए को बताया कि इस नीति के तहत ल्हासा और तिब्बती स्वायत्त क्षेत्र (टीएआर) के अन्य क्षेत्रों को पूरी तरह से बंद कर दिया है।

चीन सरकार की शून्य कोविड नीति।

टीएआर में कोविड-१९ मामले लगातार बढ़ रहे हैं। चीनी सरकार के आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, इस क्षेत्र में मंगलवार तक १४७ 'पर्याप्त या उच्च कोविडसंक्रमित क्षेत्रों' और १५८'मध्यम स्तर के संक्रमित क्षेत्रों'में १६,९०२ पुष्ट मामले थे।

ल्हासा समेत पूरे चीन में कोविड मामलों की संख्या बढ़ते रहने के बाद ३१दिन पहले ल्हासा में चीनी सरकार ने लॉकडाउन की घोषणा की थी। स्थानीय निवासियों का कहना है कि लॉकडाउन का आदेश लोगों को तैयारी के लिए पर्याप्त समय दिए बिना आया।कुछ लोगों के पास भोजन की कमी थी। लॉकडाउन से कोविड-१९के मरीजों के लिए इलाज ढूंढना भी मुश्किल साबित हुआ है।

ल्हासा में रहने वाले एक तिब्बती ने सुरक्षा कारणों से नाम न छापने की शर्त पर आरएफए की तिब्बती सेवा को बताया, 'ल्हासा लगभग एक महीने से बंद है।' सूत्र ने कहा कि चीनी सरकार जल्दबाजी में किए गए लॉकडाउन से खुद लड़खड़ा रही है।

सूत्र ने कहा,'एक पृथकवास केंद्र में बंद एक व्यक्ति की नाक से खून बह रहा था और प्रभारी अधिकारी दरवाजा खोलने के लिए चाबी नहीं ढूंढ पाए ताकि वे उसे अस्पताल ले जा सकें। वह आदमी लगभग दो दिनों तक उस खराब स्थिति में रहा।'

सूत्र ने कहा, 'एक अन्य पृथकवास केंद्र मेंकिसी को दौरा पड़ा और अस्पतालों और अधिकारियों के बीच संपर्क सुविधा न होने के कारण उसे जल्दी अस्पताल नहीं पहुंचाया जा सका। मरीज अब अस्पताल में है लेकिन बेहोश है। इसलिए भले ही चीनी सरकार ने लोगों को पृथक वास में रखने के लिए पृथकवास केंद्र की सुविधाएं स्थापित की हों, लेकिन उनके लिए सरकार के पास कोई उचित इलाज नहीं है।'

शिकायत कहीं नहीं

चीनी सोशल मीडिया शॉर्ट वीडियो प्लेटफॉर्म डॉयिन और कुआइशौ पर तिब्बतियों ने पृथकवाससुविधाओं की आलोचना की।

एक वीडियो में एक केंद्र में भर्ती एक तिब्बती ने कहा, 'कोई भी कोविडरोगियों की देखभाल या उनका इलाज नहीं कर रहा है और इस केंद्र में कोई स्वच्छता नहीं है।'

सूत्र ने कहा, 'सबसे बढ़कर, कोई अधिकारी या कार्यालय नहीं हैं जहां हम इन (दुरावस्थाओं) के बारे में शिकायत कर सकें।'

पृथकवास केंद्रों में से एक में भर्ती एक अन्य तिब्बती ने कहा कि वे 'बिना बिस्तरों के खाली घर' हैं।

दूसरे मरीज ने कहा,'यदि आप घूमते हैं, तो आप वास्तव में छत से धूल गिरते हुए देख सकते हैंजो कि कोविड मरीजों के लिए अस्वास्थकर है। भोजन समय पर नहीं पहुंचता और जब तक हम तक पहुंचता है तब तक सारा भोजन खराब हो चुका होता है।'

एक अन्य स्थानीय ने कोविड-१९ फैलाने के लिए पृथकवास केंद्रों की प्रक्रियाओं को दोषी ठहराते हुए एक वीडियो पोस्ट किया।

तीसरे व्यक्ति ने कहा, 'हम ल्हासा में कोविड मामलों में यह वृद्धि देख रहे हैं, क्योंकि जनता की जांच करने वाले अधिकारी कभी भी अपने हाथों को साफ नहीं करते हैं, और इसलिए यह चक्र चलता रहता है।'

हालांकि, आरएफएयह पुष्टि करने में असमर्थ है कि चीनी अधिकारियों ने जांच स्थलों पर वायरस फैलाया।

अन्य लोगों ने ल्हासा की सड़कों पर घंटों खड़े संक्रमित लोगों की तस्वीरें और वीडियो पोस्ट किए क्योंकि सरकार घबराई हुई है और उन्हें जल्दी से निर्दिष्ट पृथकवास केंद्रों तक नहीं पहुंचा सकती है।

ल्हासा में कर्मा मठ के एक तिब्बती ने आरएफए को बताया, 'स्थानीय अधिकारियों ने मुझे कोविड है भी या नहीं, इसका बिना किसी सत्यापन किए मुझे पृथकवास करने को मजबूर कर दिया।'

उन्होंने मुझे एक दिन के लिए पृथकवास केंद्र में ले जाने से पहले लगभग तीन घंटे तक सड़क के किनारे इंतजार कराया और फिर मुझे छोड़ दिया। उन पृथकवास केंद्रोंमें मेरे साथ लगभग ६००लोग थे और अब मुझे चिंता है कि मुझे कोविडहो सकता है।'

❖ चीनी अधिकारियों ने सार्वजनिक रूप से प्रार्थना करने पर पांच तिब्बतियों को यातनाएं दीं, एक की मौत

(चार अन्य लोग जेल में हैं और उन्हें अपने परिवार से मिलने की अनुमति नहीं है)

rfa.org / सांग्याल कुंचोक, २१सितंबर, २०२२

निर्वासन में रह रहे दो तिब्बती सूत्रों ने आरएफए को बताया कि तिब्बत में चीनी अधिकारियों ने सार्वजनिक रूप से धूप जलाने और प्रार्थना करने के आरोप में कथित तौर पर पांच तिब्बतियों को गिरफ्तार कर उन्हें प्रताड़ित किया है और उनमें से एक को मार दिया है।

चीन के उत्तर-पश्चिमी सिचुआन प्रांत में सेर्टर काउंटी (चीनी: सेडा) में पांच तिब्बतियों ने २४ अगस्त को निर्वासित तिब्बती आध्यात्मिक नेता दलाई लामा के लंबे जीवन के लिए धूप जलाई और प्रार्थना की थी। इनकी पहचान चुगधर, घेलो, छेदो, भामो और कोरी के रूप में की गई।

पुलिस ने कुछ ही समय बाद उन सबको गिरफ्तार कर लिया।हालांकि सूत्रों ने कहा कि धार्मिक गतिविधियों से किसी कानून का उल्लंघन नहीं हुआ था। आरएफएको भी इसमें किसी तरह के आरोप नहीं दिखे हैं।

निर्वासन में रह रहे एक तिब्बतीने सुरक्षा कारणों से नाम न छापने का अनुरोध करते हुए आरएफए की तिब्बती सेवा को बताया, 'गिरफ्तार किए गए तिब्बतियों को उनके क्षेत्र के स्थानीय तिब्बतियों द्वारा धार्मिक गतिविधियों को अंजाम देने के लिए नियुक्त किया गया था।'

लेकिन सरता और गोलोग क्षेत्रों में धार्मिक गतिविधियों पर चीनी अधिकारियों के बढ़ते दबदबे के तहत चीनी सरकार द्वारातिब्बतियों को अपने घर के सामने प्रार्थना झंडे भी फहराने की अनुमति नहीं है। सूत्र ने कहा कि वे तिब्बतियों को संग-सोल (एक अगरबत्ती जलाने की रस्म) करने से भी मना करते हैं। उनका कहना है कि यह पर्यावरण के लिए हानिकारक है।'

निर्वासन में रहने वाले एक अन्य तिब्बती ने सुरक्षा कारणों से नाम उजागर न करने का अनुरोधकरते हुए आरएफए को बताया कि,'चुगधर की मृत्यु कर्ज़े (गांज़ी) तिब्बती स्वायत्त प्रिफेक्चर की एक जेल में हुई, जबकि अन्य चार हिरासत में हैं।

दूसरे सूत्र ने कहा,'चुगधर ५२साल के थे और उनके परिवार में उनके माता-पिता

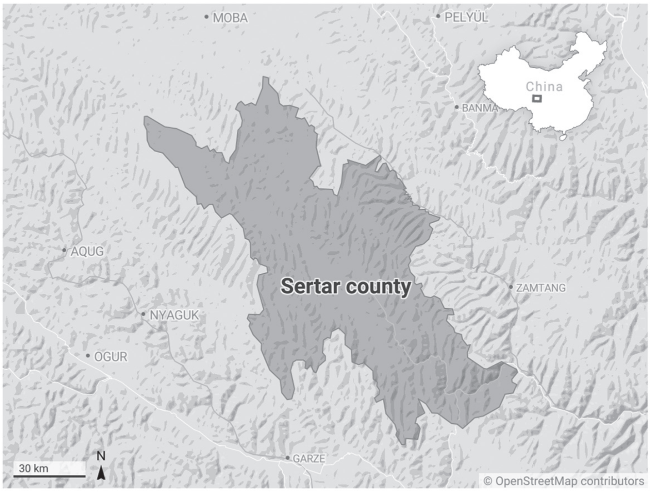

Map: RFA • Created with Datawrapper

तिब्बती शहर सेरथर।

हैं। चीनी पुलिस इस बात से इनकार करती रही कि उन्होंने उसे मौत के घाट उतारा।'

दूसरे सूत्र ने कहा,'पुलिस ने उनके परिवार को कहा कि अगर वे चुगधर का शव अपने साथ ले जाते हैं तो उन्हें १,००,००० युआन (१४,००० अमेरिकी डॉलर से अधिक) की अंतरिम सहायता दी जाएगी और परिवार के प्रत्येक सदस्य को १०,००० अतिरिक्त वार्षिक मदद दी जाएगी। लेकिन यह शव उठवाने की चीनी पुलिस की बस एक चाल थी, क्योंकि उनके परिवार को कभी भी वह पैसा नहीं मिला, जिसका उनसे वादा किया गया था।'

पहले सूत्र ने कहा कि चुगधर की मौत का आधिकारिक कारण संदिग्ध है।

पहले सूत्र ने कहा,'चुगधर एक स्वस्थ व्यक्ति थे, लेकिन उन्हें जेल में तब तक बेरहमी से प्रताड़ित किया गया जब तक कि उनकी मृत्यु नहीं हो गई। उनके परिवार को चीनी अधिकारियों ने २६ अगस्त को तलब कियाऔर सूचित किया

कि उनकी मृत्यु अचानक हो गई। उन्होंने परिवार को जेल से उसका शव लेने के लिए कहा।'

पहले सूत्र ने कहा, 'जब चुगधर के पिता और परिवार के अन्य सदस्य उसका शव लेने गएतो चीनी पुलिस ने उन्हें एक दस्तावेज पर हस्ताक्षर करने के लिए मजबूर किया, जिसमें कहा गया था कि चीनी पुलिस का उसकी मौत से कोई लेना-देना नहीं है।'

पहले सूत्र के अनुसार, अन्य चार तिब्बतियों को पहले एक सप्ताह के लिए सेर्टर काउंटी की एक जेल में हिरासत में रखा गया और फिर ३१अगस्त को कार्दज़े की एक जेल में स्थानांतरित कर दिया गया।

पहले सूत्र ने कहा,'उन पर अभी भी मुकदमा चल रहा है लेकिन उनके परिवारों को डर है कि उन्हें जल्द ही दोषी ठहराया जाएगा। उनके परिवार के सदस्यों को भी उनसे मिलने की बिल्कुल भी अनुमति नहीं है। ये तिब्बती निर्दोष हैं क्योंकि वे केवल धार्मिक गतिविधियाँ कर रहे थे।'

चीनी अधिकारियों ने तिब्बत और पश्चिमी चीन के तिब्बती आबादी वाले क्षेत्रों पर अपनी कड़ी पकड़ बना रखी है। वहां परतिब्बतियों की राजनीतिक गतिविधियों और सांस्कृतिक और धार्मिक पहचान की शांतिपूर्ण अभिव्यक्ति को प्रतिबंधित किया गया है और तिब्बतियों को अनायास ही कारावास की मनमानी सजा दी जाती है,यातनाएं दी जाती हैं और उनकी न्यायेतर हत्या तक कर दी जाती है।'

❖ तिब्बती सांसदों- यूडोन औकात्संग और खेंपो जम्फेल तेनज़िन की उत्तराखंड में आधिकारिक यात्रा संपन्न

tibet.net, ०६ सितंबर २०२२

देहरादून। निर्वासित तिब्बती संसद के कार्यक्रम के अनुसार, १७वीं निर्वासित तिब्बती संसद के सदस्य- यूडोन औकात्सांग और खेंपो जम्फेल तेनज़िन २४ अगस्त से ०५ सितंबर, २०२२ तक आधिकारिक रूप से उत्तराखंड में तिब्बती बस्तियों के दौरेपर रहे। उन्होंने आज ०६ सितंबर कोनैनीताल और डिकीलिंग तिब्बती बस्तियों के दौरे के साथ उत्तराखंड की अपनी आधिकारिक यात्रा सफलतापूर्वक संपन्न कर ली है। अपनी यात्रा के अंतिम चरण में सांसदों ने उत्तराखंड के राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह से भी शिष्टाचार भेंट की और भारत-तिब्बत समन्वय संघ (बीटीएसएस) और भारत-तिब्बत सहयोग मंच (बीटीएसएम) के अध्यक्षों और सदस्यों के साथ बैठकें की।

सांसद यूडोन औकात्संग और खेंपो जम्फेल तेनज़िन।

सांसद यूडन औकात्संग३० अगस्त कोनैनीताल के लिए रवाना हुए थे और वहां तिब्बती बाजार और मठ का दौरा किया। ०१सितंबर को डिकीलिंग तिब्बती बस्ती के लिए रवाना होने से पहले सांसद ने वहां रहने वाले तिब्बतियों से भी मुलाकात और बातचीत की।

डिकीलिंग पहुंचने परसांसद यूडोन औकात्संग के साथ सांसद खेंपो जम्फेल तेनज़िन भी शामिल हो गए, जो अपने खराब स्वास्थ्य के कारण नैनीताल जाने में असमर्थ थे। ये लोग यहां६२वें तिब्बती लोकतंत्र दिवस के आधिकारिक उत्सव में शामिल हुए, जिसमें सांसद खेंपो जम्फेल तेनज़िन ने तिब्बती लोकतंत्र के विकास, निर्वासित तिब्बती संसद के कामकाज और परम पावन दलाई लामा की उपलब्धियों के बारे में बातचीत की। जबकि सांसद यूडोन औकात्सांग ने बदलती अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक गतिविधियां और चीन द्वारा तिब्बत में तिब्बतियों पर थोपी गई क्रूर नीतियों पर बात की। इसके बाद उन्होंने जनता द्वारा उठाए गए सवालों का जवाब दिया।

उस दिन बाद मेंसांसदों ने भारतीय सेना के पूर्व उप प्रमुख रह चुके उत्तराखंड के राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंहसे शिष्टाचार भेंट की और तिब्बती संसद की ओर से उन्हें एक स्मारिका भेंट की। उन्होंने ६० से अधिक वर्षों से तिब्बतियों को भारत के अटूट समर्थन के लिए राज्यपाल का आभार व्यक्त किया। तिब्बती सांसदों ने २०१४ की तिब्बती पुनर्वास नीति के कार्यान्वयन के लिए भी राज्यपाल से आग्रह किया। इस पर राज्यपाल ने जो कुछ हो सकता है, वह करने का आश्वासन दिया और तिब्बती सांसदों के साथ संपर्क फोन नंबरों का आदान-प्रदान किया।

अगले दिन, सांसदों ने देहरादून में मठों, संगठनों और गैर सरकारी संगठनों का दौरा किया और स्थानीय नेताओं और गणमान्य व्यक्तियों के साथ आंतरिक बैठक की। इसके बाद संसद सदस्यों ने एक बैठक में तिब्बत के मुद्दे पर गहन चर्चा की, जिसमें प्रो. सुरेखा डंगवाल (दून विश्वविद्यालय, देहरादून की कुलपति), प्रो. दिनेश शास्त्री (संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार के कुलपति), प्रो. पी. डी. जुयाल (भारत तिब्बत समन्वय संघ-बीटीएसएस- के अध्यक्ष), प्रो. विजय कौल, कर्नल थपग्याल (सेवानिवृत्त), डॉ. सूरज कुमार प्राचा, डॉ. अरुण मिश्रा, डॉ. पुरोहित, श्री मनोज गहटोरी, श्री जी.एस. नेगी (देहरादून बीटीएसएस के अध्यक्ष), कमांडेंट हिमांशु (सेवानिवृत्त), श्री सेमवाल, श्री आशीष सेमवाल, श्री रतूड़ी, देहरादून तिब्बती महिला संघ और दून विश्वविद्यालय में तिब्बती सेटलमेंट कार्यालय के कर्मचारी उपस्थित रहे। बैठक में सांसद खेंपो जम्फेल तेनज़िन ने सदियों से साझा संस्कृति, धर्म और भाषा के साथ भारत और तिब्बत के बीच विशेष संबंधों पर बात की। जबकि सांसद यूडोन औकात्सांग ने एक प्रस्तुति के साथ तिब्बत में हो रहे पर्यावरण क्षरण को समझाया। बैठक मेंउपरोक्त कुलपतियों और प्रोफेसरों द्वारा तिब्बत पर बातचीत के बादइस महीने से दून विश्वविद्यालय और संस्कृत विश्वविद्यालय में तिब्बती भाषा के अध्ययन के अवसर प्रदान करने का निर्णय लिया गया।

०४ सितंबर कोतिब्बती सांसदों नेउत्तराखंड भारत-तिब्बत सहयोग मंच (बीटीएसएम) के अध्यक्ष श्री अनिल चौधरी और बीटीएसएम के सदस्यों से

मुलाकात की और तिब्बत के मुद्दे को आगे बढ़ाने के लिए भविष्य की योजनाओं पर चर्चा की।

❖ चेक सीनेट में सिक्योंग पेन्पा छेरिंग के लिए स्वागत समारोह

tibet.net, ०६ सितंबर २०२२

चेक सीनेट में सिक्योंग पेन्पा छेरिंग।

प्राग। चेक गणराज्य की सीनेट ने ३० अगस्त २०२२ को सीनेट में सिक्योंग पेन्पा छेरिंग के नेतृत्व वाले सीटीए प्रतिनिधिमंडल का स्वागत किया।

तिब्बती लोगों के प्रति समर्थन और केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के लोकतांत्रिक रूप से चुने गए नेता सिक्योंग पेन्पा छेरिंग के प्रति सम्मान व्यक्त करते हुएचेक गणराज्य की सीनेट ने उनके सम्मान में आधिकारिक स्वागत समारोह का आयोजन किया। इसके बाद सीनेट के ऐतिहासिक ग्रीन मीटिंग लाउंज में सिक्योंग के साथ बैठक हुई।

सिक्योंग पेन्पा छेरिंग का स्वागत राष्ट्रपति मिलोस विस्त्रसिल,सीनेट के प्रथम उपाध्यक्ष माननीय जिरी रुज़िका,उपराष्ट्रपति माननीय जिरी ओबरफल्जर,उपराष्ट्रपति माननीय जित्का सीतलोवा,यूरोपीय संघ के मामलों की सीनेट समिति के अध्यक्ष माननीय डेविड स्मोलजैक,विदेश मामलों की समिति के अध्यक्ष पावेल फिशर,चेक सीनेट में तिब्बत समर्थक समूह के अध्यक्ष माननीय प्रेमिसल रबास और चेक सीनेट की महासचिव सुश्री जाना वोहरालीलोवा ने किया।

तिब्बती प्रतिनिधिमंडल में वरिष्ठ सलाहकार और रणनीतिक समिति के सदस्य केलसांग ग्यालत्सेन शामिल हैं, जो परम पावन दलाई लामा के पूर्व दूत रह चुके हैं। उनके अलावा इसमेंतिब्बत ब्यूरो जिनेवा के प्रतिनिधि थिनले चुक्की और संयुक्त राष्ट्र में एडवोकेसी अधिकारी कलडेन त्सोमो भी शामिल हैं।

सिक्योंग पेन्पा छेरिंग ने स्वागत के लिए सीनेटरों को धन्यवाद दिया और तिब्बत और अन्य क्षेत्रों में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (सीसीपी) द्वारा लगातार बढ़ती दमनकारी नीतियों का विवरण देते हुए तिब्बत में बिगड़ती स्थिति की जानकारी दी। उन्होंने आगे तिब्बतियों की आवाजों और अनुभवों पर ध्यान देने में अंतरराष्ट्रीय समुदाय की विफलता पर ध्यान आकृष्ट दिया, जिसके कारण अंतरराष्ट्रीय स्तर पर दमन को बढ़ावा मिला, वैश्विक शांति और सुरक्षा के मुद्दे उठे और सीसीपी द्वारा उत्पन्न खतरा पैदा हुआ।

सिक्योंग ने सीनेटरों से चीन और उसके नियंत्रण वाले क्षेत्रों में वास्तविक परिवर्तन लाने के लिए ठोस कार्रवाई करने का आग्रह किया। इस समय चेक गणराज्य यूरोपीय संघ की अध्यक्षता कर रहा है। इसलिए सिक्योंग ने सीनेटरों से चीन पर यूरोपीय संघ के विशेष प्रतिनिधित्व का आह्वान करने का आग्रह किया, जो तिब्बतियों, उय्यूरों, हांगकांगवासियों और अन्य लोगों से संबंधित मुद्दों पर चर्चा करने के लिए संपर्क सूत्र के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

सीनेटरों ने सिक्योंग द्वारा उठाई गई चिंताओं को गंभीरता से लिया और संभावित कार्रवाइयों पर चर्चा की। उन्होंने इस बात पर भी ध्यान दिया कि चीनी आक्रमण और वैश्विक सुरक्षा और शांति के लिए इसके खतरे का मुकाबला करने पर विचार किया जा सकता है।

एक घंटे की बैठक के बादसीनेट ने वाल्डस्टीन पैलेस में सिक्योंग पेन्पा छेरिंग और उनके प्रतिनिधिमंडल को दोपहर में भोजन की दावत दी।

बैठक में एक बार फिर दिवंगत राष्ट्रपति वैक्लेव हावेल की तिब्बती लोगों के अहिंसक स्वतंत्रता आंदोलन के साथ खड़े होने और अधिनायकवाद और उत्पीड़न के खिलाफ लड़ने की परंपरा को रेखांकित किया गया।

❖ तिब्बत पर स्विस संसदीय समूह ने तिब्बत और तिब्बत के बाहर रह रहे तिब्बतियों के दमन की सुनवाई की

tibet.net, २० सितंबर, २०२२

लेखिका फैनी इओना मोरेल और 'तिब्बत ब्यूरो जिनेवा' की प्रतिनिधि थिनले चुक्की।

बर्न। आज २० सितंबर को तिब्बत पर गठित स्विस संसदीय समूह ने चीनी अधिकृत तिब्बत में संस्कृति-आधारित हिंसा और दमन के साथ-साथ तिब्बतियों के खिलाफ किए जा रहे अंतरराष्ट्रीय दमन पर गवाही सुनी।

'व्हिस्पर्स फ्रॉम द लैंड ऑफ़ स्नोज़: कल्चर-बेस्ड वायलेंस इन तिब्बत' की लेखिका फैनी इओना मोरेल और 'तिब्बत ब्यूरो जिनेवा' की प्रतिनिधि थिनले चुक्की ने तिब्बत में तिब्बतियों पर चल रहे दमन के साथ-साथ निर्वासित तिब्बतियों के खिलाफ चीन के अंतरराष्ट्रीय दमन का विस्तृत विवरण दिया।

तिब्बत स्विस संसदीय समूह के सह-अध्यक्ष माननीय निकोलस वाल्डर और निक गुगर, और माननीय सदस्य प्रिस्का बिरर-हेमो, लॉरेंस फेहलमैन रिएल, क्लाउडिया फ्रिडल और मार्टिना मुंज बैठक में स्विस-तिब्बती मैत्री संघ के अध्यक्ष थॉमस बुचली और उपाध्यक्ष ल्हावांग नोगोरखांगसर के साथ उपस्थित थे।

तिब्बत का दौरा कर चुकीं सुश्री मोरेलने कहा, 'मैं ल्हासा का एक व्यक्तिगत अनुभव साझा करना चाहती हूं। वहां केवल तिब्बतियों पर ही नजर नहीं रखी जा रही है। कई मौकों परबिना किसी विवेक के, बिना किसी सोच-समझ केव्यक्तिगत रूप से पुलिस अधिकारियों द्वारा मेरा पीछा किया गया है, जो मेरी

हर गतिविधियों को लेकर बहुत चौकस थे। मैं चीनी और सैन्य पुलिस बलों की धमकी के बारे में भी बहुत चिंतित थी। ल्हासा मेंजोखांग मंदिर और उसका कोरा इस तरह की धमकी का एक अच्छा उदाहरण है। बंद गलियों और सुरक्षित सड़कों पर अनगिनत निगरानी कैमरों के अलावापुलिस और सैन्य बलों की भारी तैनाती है। सशस्त्र, लड़ाकू सैनिक चारों ओर पास-पड़ोस कीसड़कों पर और छतों पर लड़ने के मूड में तैनात रहते हैं और नियमित रूप से तीर्थयात्रियों के बीच गश्त करते हैं। अग्निशामक यंत्र और धातु के स्नेयर पोल चारो ओर लगे हुए हैं।'

अपनी गवाही के दौरानउन्होंने आगे कहा कि,'तिब्बत में नरसंहार के कृत्यों को ठी उसी तरह माना जाना चाहिए, जैसा कि १९६० में तिब्बत मुद्दे की जांच के लिए कानूनी समिति द्वारा घोषित किया गया था। तिब्बतियों की सुरक्षा के लिए वही स्थिति नाटकीय रूप से अब भी जारी हैं। और वहां शांतिस्थापित होने की उम्मीद दिन-ब-दिन कम होती जा रही है।'

चीनी सरकार द्वारा तिब्बती धर्म और संस्कृति के उत्पीड़न के मुद्दे पर उन्होंने कहा कि 'यह कहकर कि, तिब्बती आध्यात्मिक नेता के पुनर्जन्म का निर्धारण चीन का आंतरिक मामला है, सीसीपी एक बार फिर इस तथ्य की अनदेखी कर रही है कि दलाई लामा एक प्रख्यात आध्यात्मिक व्यक्ति हैं। वह अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त है और दुनिया भर के लोगों को तिब्बत और तिब्बती होने की अपनी सीमाओं से परे जाकर प्रेरित करते हैं। उनका उत्तराधिकार तिब्बती बौद्ध धर्म के लिए केंद्रीय महत्व का विषय है, जो कई देशों में प्रचलित है। यदि सीसीपी आगे बढ़ती है और अपने स्वयं के कानूनों, नियमों और हितों के आधार पर तिब्बतियों पर १५वें दलाई लामा को थोपती हैतो यह तिब्बत में संघर्ष को और बढ़ा देगा और तिब्बतियों को और संकट में डाल देगा।'

सुश्री मोरेल की गवाही का समर्थन करते हुएप्रतिनिधि थिनले ने तिब्बत की वर्तमान स्थिति पर वर्तमान कशाग का ब्रीफिंग पेपर साझा किया और नोट किया कि तिब्बती चीनी दमनकारी नीतियों से पीड़ित हैं। गुलामी पर विशेष प्रतिवेदक की रिपोर्ट स्पष्ट रूप से पूर्वी तुर्केस्तान (चीनी: झिंझियांग) और तिब्बत के बीच एक समानांतर रेखा खींचती है और कहती है कि झिंझियांग के समान जबरन श्रम शिविरों की व्यवस्था तिब्बत में की जा रही है और इसे साबित करने के लिए पर्याप्त सबूत हैं। मानवता के खिलाफ अपराधों की स्वतंत्र जांच की जा रही है। इसलिए समय आ गया है कि स्विस संसद सहित अंतरराष्ट्रीय समुदाय संयुक्त राष्ट्र के विशेषज्ञों के आह्वान में शामिल हों कि चीन में विशेष रूप से तिब्बत, पूर्वी तुर्केस्तान और हांगकांग में मानवाधिकारों की स्थिति पर एक स्वतंत्र जांच की जाए।

संसद सदस्यों ने तिब्बत की स्थिति के बारे में अपनी गंभीर चिंता व्यक्त की और कहा कि वे स्थिति की बारीकी से निगरानी कर रहे हैं। उन्होंने तिब्बत और तिब्बतियों के लिए अपने निरंतर समर्थन और एकजुटता जारी रखने का आश्वासन दिया।

❖ सिक्योंग पेन्पा छेरिंग ने सप्ताह भर की जापान यात्रा सफलतापूर्वक संपन्न की

tibet.net, २८ सितंबर, २०२२

जापानी सांसदों को संबोधित करते हुए सिक्योंग पेन्पा छेरिंग।

टोक्यो। केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) के सिक्योंग पेन्पा छेरिंग ने जापान की अपनी एक सप्ताह की आधिकारिक यात्रा सफलतापूर्वक संपन्न की। २१सितंबर को नारिता हवाई अड्डा पहुंचने परप्रतिनिधि डॉ छेवांग ग्यालपो आर्य,तिब्बत कार्यालय के कर्मचारियों और स्थानीय तिब्बतियों ने पारंपरिक तिब्बती खता के साथ उनका स्वागत किया। जापान आगमन के पहले दिनसिक्योंग ने नागाटाचो में जापानी संसद भवन का दौरा किया, जहां 'जैपनीज पार्लियामेंटरी ग्रुप फॉर तिब्बत' के अध्यक्ष शिमोमुरा हकुबुन और सदस्यों ने संसद के सम्मेलन कक्ष में उनकी अगवानी की और उनका स्वागत किया।

जापान इंस्टीट्यूट फॉर नेशनल फंडामेंटल्स के अध्यक्ष शिमोमुरा, वाइस चेयरमैन वतनबे और सकुराई योशिको ने सिक्योंग पेन्पा छेरिंगका स्वागत किया और उन्हें संसदीय समर्थक समूह के कामकाज से अवगत कराया। उन्होंने चीन-तिब्बत संघर्षों के समाधान के लिए उनके निरंतर समर्थन की भी पुष्टि की।

सिक्योंग पेन्पा छेरिंग ने जापानी सांसदों को पूरे दिल से समर्थन के लिए सभी तिब्बतियों की ओर से गहरा आभार व्यक्त किया। उन्होंने परम पावन दलाई लामा के अच्छे स्वास्थ्य और उनकी चार प्रतिबद्धताओं के बारे में सांसदों को जानकारी दी, जिसका सांसदों ने तालियों की गड़गड़ाहट के साथ समर्थन किया। सिक्योंग ने तिब्बती पठार के महत्व के बारे में चर्चा की और बताया कि यह कैसे दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों और विश्व जलवायु को प्रभावित करता है। उन्होंने सांसदों को तिब्बत की वर्तमान स्थिति और कम्युनिस्ट चीन द्वारा तिब्बती पहचान, संस्कृति और भाषा को मिटाने की नापाक कोशिशों के बारे में भी ताजा जानकारी दी।

उन्होंने जापानी सांसदों से भी अमेरिकी कांग्रेस के समान प्रस्तावों को अपनाने और तिब्बत के लिए एक विशेष समन्वयक नियुक्त करने का आह्वान किया। इसके अलावा, सिक्योंग ने तिब्बती बस्तियों को जीवंत बनाने और मानव संसाधन के साथ ही भौतिक संसाधनों को बढ़ाने के लिए वित्तीय सहायता और सहयोग का अनुरोध किया।

जापानी सांसदों के साथ बैठक के बाद सिक्योंग ने संसद भवन में पूर्व प्रधानमंत्री दिवंगत शिंजो अबे के केबिन

का दौरा किया और उनके चित्र के सामने खड़े होकर उन्हें श्रद्धांजलि दी उनके लिए प्रार्थना की।

अगले दिन, सिक्योंग ने चिबा प्रान्त में दो प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों- चिबा इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी और रीताकू विश्वविद्यालय का दौरा किया, जहां उन्होंने छात्रों और संकाय सदस्यों को 'अंतरराष्ट्रीय संदर्भ में तिब्बत' विषय पर व्याख्यान दिया। इसके अलावा, उन्होंने छात्रों के साथ बातचीत की और उनके द्वारा बनाए गए रोबोट का अध्ययन किया।

तीसरे दिन, सिक्योंग पेन्पा छेरिंग ने 'तिब्बत, उग्यूरऔर दक्षिण मंगोलिया: ऑक्यूपायड नेशंस अंडर द सीसीपी, बिल्डिंग ए कॉमन ग्राउंड (तिब्बत, उग्यूरऔर दक्षिण मंगोलिया जैसे सीसीपी के कब्जे वाले देशों के बीच आम सहमति का निर्माण)' विषयक एक संगोष्ठी में भाग लिया, जहां सिक्योंग मुख्य वक्ता थे। जापानी सांसदों, थिंक टैंक के सदस्यों, उग्यूर और दक्षिण मंगोलिया के प्रतिनिधियों और मीडिया के लोगों ने टोक्यो में बंक्यो सिविक सेंटर हॉल में आयोजित इस संगोष्ठी में उपस्थित रहे।

संगोष्ठी के बाद सिक्योंग ने एक संवाददाता सम्मेलन में भाग लिया, जहां जापान के बारह प्रमुख मीडिया संस्थानों के पत्रकारों और संवाददाताओं ने उनके साथ बातचीत की। उन्होंने मध्यम मार्ग के दृष्टिकोण और तिब्बती स्वतंत्रता की ऐतिहासिक वास्तविकता को स्पष्ट किया और तिब्बत की उसकी स्थिति का वर्णन किया।

चौथे दिन, सिक्योंग ने तिब्बत कार्यालय का दौरा किया और जापान में रह रहे तिब्बतियों से मुलाकात की। उन्होंने कशाग की नीति की व्याख्या की और तिब्बतियों से अनुरोध किया कि वे कम्युनिस्ट शासन के तहत पीड़ित अपने भाइयों और बहनों को न भूलें। उन्होंने उन्हें तिब्बती के रूप में अपनी जिम्मेदारी निभाने और तिब्बती पहचान को बनाए रखने की याद दिलाई।

दोपहर में, सिक्योंग सैतामा प्रिफेक्चर के लिए रवाना हुए और सैतामा मेडिकल यूनिवर्सिटी का दौरा किया, जहाँ विख्यात डॉ. मारुकी सेमेई के पोते डॉ. कियोयुकी मारुकी (एमडी) डॉक्टर हैं। दादा डॉ. मारुकी ने १९६०के दशक की शुरुआत में पहले पांच तिब्बती छात्रों और बीस तिब्बती नर्सों को शिक्षित करने में मदद की। मारुकी और उनकी चिकित्सा टीम ने चिकित्सा विश्वविद्यालय पर एक प्रस्तुति दी। सिक्योंग ने डॉ. मारुकी (एमडी) और सदस्यों को उनकी मदद और सहयोग के लिए धन्यवाद दिया। इस दौरान डॉ.छेवांग निशिकुरा और डॉ. तामडिंग सेदाईजी भी टीम में शामिल रहे। बाद में सिक्योंग ने सैतामा में तिब्बतियों से मुलाकात की और उनके द्वारा आयोजित रात्रिभोज में भाग लिया।

पांचवें दिन, सिक्योंग ने जापान के बारह प्रमुख तिब्बत समर्थक समूहों के प्रतिनिधियों और सदस्यों के साथ मुलाकात की। उन्होंने उन्हें उनके समर्थन के लिए धन्यवाद दिया और उन्हें तिब्बत की स्थिति और केंद्रीय तिब्बती प्रशासन की नीति से अवगत कराया। दोपहर में, सिक्योंग ने तिब्बत हाउस के समर्थकों, प्रायोजकों, स्वयंसेवी अनुवादकों और सहायकों से मुलाकात की। तिब्बत हाउस ने टोक्यो के अकबोनोबाशी में ताशी डेलेक रेस्तरां में सिक्योंग और स्वयंसेवकों के लिए रात्रिभोज का आयोजन किया।

छठे दिन, सिक्योंग ने कुछ महत्वपूर्ण अतिथियों और प्रायोजकों से मुलाकात की और उन्हें उन क्षेत्रों की जानकारी दी जहां तिब्बती प्रशासन को समर्थन और सहयोग की आवश्यकता है। बाद में, सिक्योंग ने तिब्बत हाउस स्टाफ क्वार्टर का दौरा किया। एक सप्ताह की व्यस्त और फलदायी यात्रा पूरी करने के बाद ०७ तारीख की सुबह सिक्योंग दिल्ली के लिए रवाना हो गए। कोरोना वायरस महामारी संबंधी प्रतिबंधों के कारण, स्वागत समारोह और खाने-पीने के आयोजनों को कार्यक्रम से हटा दिया गया था।

यात्रा की प्रमुख उपलब्धि संसद सदस्यों के साथ बैठक करना और उनसे निरंतर सहायता और समर्थन का आश्वासन प्राप्त करना था। सिक्योंग ने जापान में तिब्बतियों के लिए प्रशिक्षण और रोजगार की स्थिति के बारे में पता लगाने के लिए कुछ नेताओं और प्रभावशाली लोगों के साथ अलग से मुलाकात की। सैतामा चिकित्सा विश्वविद्यालय जापानी भाषा के अच्छे जानकार तिब्बती नर्सों को लेने के लिए सहमत हो गया। एक जापानी भाषा स्कूल की स्थापना पर भी चर्चा की गई। समर्थक समूह के सदस्यों और सामान्य समर्थकों के साथ बैठक के दौरान तिब्बती मुद्दे के प्रति उनकी प्रतिबद्धता और संचार को मजबूत करने में मदद मिली।

सांसद, विश्वविद्यालय के संकाय सदस्य और समर्थक सिक्योंग पेन्पा छेरिंग के तर्कों और राजनयिक दृष्टिकोण से प्रभावित थेऔर उन्होंने तिब्बत मुद्दे पर अपने पूरे समर्थन का आश्वासन दिया। इसके अलावा संसद सदस्यों के साथ सिक्योंग की बैठक, शिंजो अबे के केबिन की यात्राऔर प्रेस कॉन्फ्रेंस की समाचार-पत्रों और स्थानीय मीडिया में अच्छी तरह से रिपोर्टिंग की गई।

❖ सांसद खेंपो कड़ा न्गेडुप सोनम और लोबसांग ग्यात्सो ने पांडिचेरी के मुख्यमंत्री से मुलाकात की, सांसदोंकी आधिकारिक यात्रा संपन्न

tibet.net, २९ सितंबर, २०२२

सांसद खेंपो कड़ा न्गेगडुप सोनम और लोबसांग ग्यात्सो ने पांडिचेरी के मुख्यमंत्री से भेंट की।

चेन्नई।१७वीं निर्वासित तिब्बती संसद के कार्यक्रम के अनुसार,सांसदों- खेंपो कड़ा न्गेडुप सोनम और लोबसांग ग्यात्सो सीथर ने २५ से २८ सितंबर, २०२२ तक चेन्नई,ऑरोविले और पांडिचेरी की अपनी आधिकारिक यात्रा सफलतापूर्वक संपन्न की। अपनी यात्रा के दौरान, सांसदों ने पांडिचेरी के मुख्यमंत्री श्री एन. रंगास्वामी, पुडुचेरी विधानसभा के अध्यक्ष श्री एम्बलम आर. सेल्वम,चेन्नई (टीईसीसी) में ताइपे आर्थिक और सांस्कृतिक केंद्र के महानिदेशक बेन वांगऔर चेन्नई में अमेरिका के महावाणिज्यदूत जूडिथ रविन से शिष्टाचार भेंट की। उन्होंने उपरोक्त स्थानों पर अध्ययन कर रहे तिब्बत समर्थकों और तिब्बती छात्रों से भी मुलाकात की।

२५ सितंबर को चेन्नई पहुंचने पर दक्षिण क्षेत्र के मुख्य प्रतिनिधि जिग्मे त्सुल्ट्रिम के साथ सांसदों ने लंबे समय से तिब्बत समर्थक श्रीमती आशा रेड्डी से मुलाकात की। श्रीमती आशा रेड्डी ने अतिथि सांसदों

के सम्मान में रात्रिभोज दिया। श्रीमती रेड्डी द्वारा तिब्बत मुद्दे का निरंतर समर्थन करने और वहां पढ़ने वाले तिब्बती छात्रों को प्रदान की गई सहायता के लिए उनका हृदय से आभार व्यक्त करते हुए सांसदों ने उनसे आगे भी अपना समर्थन जारी रखने का आग्रह किया। सांसदों ने श्रीकती रेड्डी को निर्वासित तिब्बती संसद का एक स्मृति चिन्ह भेंट किया।

अगले दिनसांसदों ने तिब्बत समर्थक पादरी माइकल ह्यूबर्ट, मद्रास विश्वविद्यालय के प्रोफेसर रामू मणिवन्नन, श्रीमती आशा रेड्डी, श्री डी.वी. धशरथ शा (भारत-तिब्बत सहयोग मंच के चेन्नई के अध्यक्ष), दक्षिण क्षेत्र के मुख्य प्रतिनिधि जिग्मे त्सुल्ट्रिम और तीन स्टाफ सदस्य के साथ बैठक की। उन्होंने तिब्बत के मुद्दे से संबंधित मुद्दों पर चर्चा की जिसमें तिब्बत समर्थक समूहों का उद्देश्य, भविष्य की परियोजनाएं और अन्य शामिल हैं।

उस दिन बाद में सांसदों ने मेन-त्सी-खांग का दौरा किया और चेन्नई में पढ़ रहे तिब्बती छात्रों से मुलाकात की। उन्होंने छात्रों के साथ बातचीत की और सार्वजनिक वार्ता के बाद छात्रों द्वारा उठाए गए सवालों के जवाब दिए। उसी दिन उन्होंने अधिवक्ता अरविंद के साथ भी बैठक की और तिब्बत की स्थिति, राज्य के कानूनों और तिब्बतियों के कल्याण पर चर्चा की।

सांसदों ने २७ सितंबर को मद्रास के भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी-एम) का दौरा किया। उन्होंने आईआईटीएम के छात्रों के साथ बातचीत की और समकालीन तिब्बती पाठ्यक्रम से उनका परिचय करवाया। सांसदों ने वहां के मानविकी और सामाजिक विज्ञान विभाग के प्रमुख डॉ. ज्योतिर्मय त्रिपाठी से मुलाकात की। सांसद खेंपो कड़ा न्गेडुप सोनम ने तिब्बत के भीतर की वर्तमान गंभीर स्थिति और कोविड-१९ महामारी के संदर्भ में चीन द्वारा तिब्बत में अपनाई गई दमनकारी नीतियों पर बात की, जबकि सांसद लोबसांग ग्यात्सो सीथर ने अंतरराष्ट्रीय मंच पर तिब्बत के मुद्दे की स्थिति, समर्थन और तिब्बतियों को भारत द्वारा प्रदान की गई सहायताऔर तिब्बत के मुद्दे से संबंधित अन्य विषयों पर पर बात की। उन्होंने मध्यम मार्ग दृष्टिकोण (एमडब्ल्यूए), परम पावन दलाई लामा की पुनर्जन्म प्रक्रिया, चीन की दमनकारी नीतियों और अन्य पर सवालों के जवाब भी दिए।

इसके बाद सांसदों ने चेन्नई में ताइपे आर्थिक और सांस्कृतिक केंद्र (टीईसीसी) के महानिदेशक बेन वांग और निदेशक जुलियाना चिन से शिष्टाचार भेंट की और सामान्य हित के मुद्दों पर बातचीत की। निदेशक को सांसदों द्वारा निर्वासित तिब्बती संसद का एक स्मृति चिन्ह भेंट किया गया।

उन्होंने महावाणिज्य दूत जुडिथ रविन और राजनीतिक आर्थिक प्रमुख विरसा पर्किन्स और चेन्नई में अमेरिका के महावाणिज्य दूतावास की राजनीतिक और आर्थिक विशेषज्ञ गीता गोपालकृष्ण से भी शिष्टाचार भेंट की। सांसदों द्वारा महावाणिज्य दूत को निर्वासित तिब्बती संसद का एक स्मृति चिन्ह भी भेंट किया गया।

२८ सितंबर को सांसदों के पांडिचेरी पहुंचने पर भारत-तिब्बत मैत्री संघ के क्षेत्रीय के अध्यक्ष श्री अधवन ने उनका स्वागत किया। वे अरबिंदो आश्रम के निदेशक से मिले जिन्होंने सादर अपनी दो पुस्तकें सांसदों को भेंट कीं।

इसके बाद उन्होंने पांडिचेरी के मुख्यमंत्री श्री एन. रंगास्वामी से शिष्टाचार भेंट की। सांसदों ने मुख्यमंत्री को सामान्य रूप से तिब्बत के मुद्दे और विशेष रूप से तिब्बती प्रवासियों की स्थिति से अवगत कराया। इसके बाद सांसदों ने पुडुचेरी विधानसभा के अध्यक्ष श्री एम्बलम आर. सेल्वम के साथ शिष्टाचार भेंट की और तिब्बत के मुद्दे पर चर्चा की। उस दिन बाद में सांसदों ने ऑरोविले में तिब्बती सांस्कृतिक मंडप का दौरा कियाऔर इसके निदेशक क्लाउडे अर्पी, सुश्री केल्सांग और अन्य लोगों से मुलाकात की।

सांसद खेंपो कड़ा नेगडुप सोनम और लोबसंग ग्यात्सो सीथर ने इसके साथ ही चेन्नई, ऑरोविले और पांडिचेरी की अपनी आधिकारिक यात्रा सफलतापूर्वक संपन्न की। वे दक्षिण भारत में अपनी आधिकारिक यात्रा जारी रखेंगे।

❖ भारत-तिब्बत संघ ने उत्तर प्रदेश के ग्रेटर नोएडा में दो दिवसीय राष्ट्रीय चिंतन बैठक का आयोजन किया

tibet.net, १२ सितंबर २०२२

भारत-तिब्बत संघ की चिंतन बैठक।

ग्रेटर नोएडा। भारत के सुप्रीम कोर्ट की सेवानिवृत्त जज और भारत-तिब्बत संघ की अध्यक्ष न्यायमूरि्त ज्ञान सुधा मिश्रा ने भारत-तिब्बत संघ द्वारा उत्तर प्रदेश के ग्रेटर नोएडामें आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय चिंतन बैठक काउद्घाटन किया। कार्यक्रम की शुरुआत भारत के विभिन्न हिस्सों से आए भारत-तिब्बत संघ के सभी सदस्यों के परिचय के साथ हुई, जिन्हें एक तिब्बती पारंपरिक सफेद दुपट्टा (खतक) और भारत-तिब्बत संबंधों पर पुस्तक और पुस्तिका भेंट की गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता भारत-तिब्बत संघ की अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्रीमती ज्ञान सुधा मिश्रा ने की और इसमें भारतीय सेना से सेवानिवृत्त मेजर जनरल नीलेंद्र कुमार, पूर्व आईजी आईपीएस आनंद वर्धन शुक्ला, सीटीए के पूर्व उपाध्यक्ष आचार्य येशी फुंट्सोक, जम्मू-कश्मीर अध्ययन केंद्र, नई दिल्ली के निदेशक डॉ आशुतोष भटनागर और आईटीसीओ-दिल्ली से ताशी देकी ने भाग लिया।

न्यायमूर्ति ज्ञान सुधा मिश्रा ने कैलाश-मानसरोवर की मुक्ति को अंतिम लक्ष्य बताया। उन्होंने कहा कि तिब्बत और कैलाश-मानसरोवर का भारत के साथ प्राचीन काल से ही पौराणिक और आध्यात्मिक संबंध रहा है। इसलिए लोगों को तिब्बत और कैलाश- मानसरोवर के मुक्ति अभियान से जुड़ना होगा।

मेजर जनरल नीलेंद्र कुमार ने तिब्बत की स्वतंत्रता को भारतीय सीमाओं की सुरक्षा के लिए आवश्यक बताया। उन्होंने कहा कि यह रणनीतिक रूप से आवश्यक है कि तिब्बत जल्द से जल्द स्वतंत्र हो।

भारत-तिब्बत संघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष और पूर्व आईजी आनंद वर्धन शुक्ला आईपीएस ने कहा कि आज दुनिया में सबसे ज्यादा मानवाधिकारों का उल्लंघन तिब्बत में हो रहा है। कोई सभ्य समाज इसकी उपेक्षा कैसे कर सकता है? गौरतलब है कि कम ही लोगों को इस बात का अहसास होता है कि अपने स्वाभिमान और गौरव का त्याग कर जीना कितना मुश्किल है।

तिब्बती संसद के पूर्व डिप्टी स्पीकर आचार्य येशी फुंट्सोक ने कहा कि तिब्बत की मूल संस्कृति भारत की मूल संस्कृति पर आधारित है।

भारत-तिब्बत समन्वय केंद्र, नई दिल्ली से ताशी ने लोगों से तिब्बत मुक्ति साधना में शामिल होने का आह्वान किया और इस ओर संगठन द्वारा किए जा रहे कार्यों के लिए आभार व्यक्त किया।

देश के प्रख्यात विचारक और जम्मू-कश्मीर स्टडी सेंटर, नई दिल्ली के निदेशक डॉ आशुतोष भटनागर ने कहा कि चीन की सीमा कभी भी भारत के साथ नहीं लगती थी। यह अवरोध भी प्रकृति ने ही बनाया है। प्राचीन काल से ही भारत की प्राकृतिक सीमा हिंदुकुश पर्वत से मानी जाती रही है। हिमालय और तिब्बत भारत और चीन को एक दूसरे से अलग करते हैं। चीन का वास्तविक आकार वर्तमान आकार का केवल एक तिहाई है, बाकी उसके द्वारा किया गया अवैध कब्जा है। यदि हम प्राचीन इतिहास को देखें तो पता चलेगा कि विभिन्न संधियों में उल्लेख है कि कैलाश-मानसरोवर क्षेत्र के विकास के लिए भारत द्वारा कैलाश-मानसरोवर क्षेत्र के विकास पर राजस्व संग्रह से और कर संग्रह से खर्च किया गया था।

दो दिवसीय चिंतन बैठक में देश के विभिन्न प्रांतों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। राष्ट्रीय महासचिव सौरभ सारस्वत ने बताया कि बैठक में गंगोत्री धाम मंदिर समिति उत्तराखंड के अध्यक्ष रावल हरीश सेमवाल, वृंदावन के पूज्य संत आदरणीय सुनील कौशल जी महाराज, देश की प्रसिद्ध कवयित्री श्रीमती. रुचि चतुर्वेदी,उत्तर क्षेत्र संयोजक श्री दिनेश जिंदल, अंतरराष्ट्रीय मंडल संयोजक सुखमिंदर पाल सिंह ग्रेवाल, असम से अलका पटवारी, हिमाचल प्रदेश से जोगिंदर सिंह वर्मा, पंजाब से हरजीत सिंह भुल्लर, कश्मीर से विवेक सिंघल, गुजरात से मंजरी सिंह औरहरि भाई, राजस्थान से श्री ओम प्रकाश त्रिपाठी और श्री ओंकार सिंह राजपुरोहित, सिक्किम से शशि शर्मा, हरियाणा से किशोर कुमार राय, जस माया, दोरजी और अनूप गिरि जी महाराज, दिल्ली से विजय दीप, काशी से बलराज धनखड़, संदीप गर्ग, विपिन बिनवाल, सुनील, नागेंद्र कविदयाल और देश के कई प्रांतों से आए अनेक प्रमुख पदाधिकारियों ने भाग लिया।

❖ दिल्ली में बेनेट विश्वविद्यालय छात्र समूह और तिब्बती गैर सरकारी संगठनों के बीच तिब्बत मुद्दे पर संवाद- सत्र

tibet.net, १९ सितंबर, २०२२

तिब्बती मुद्दे पर संवाद में जुटे बेनेट विश्वविद्यालय के छात्र।

नई दिल्ली। तिब्बत और तिब्बती मुद्दे के बारे में जानने में भारतीय युवाओं की जिज्ञासा को ध्यान में रखते हुएभारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय (आईटीसीओ) ने सम्यलिंग तिब्बती सेटलमेंट कार्यालय, दिल्ली की ओर से १६ सितंबर २०२२ को सम्यलिंग तिब्बती बस्ती के तिब्बती गैर सरकारी संगठनों औरबेनेट विश्वविद्यालय, ग्रेटर नोएडा, उत्तर प्रदेशके छात्र समूह के बीच एक संवाद-सत्र का आयोजन किया गया।

आईटीसीओ के उप समन्वयक ताशी देकी ने सदस्यों को भारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय के बारे में जानकारी दी और तिब्बती स्वतंत्रता आंदोलन के लिए काम कर रहे केंद्रीय तिब्बती प्रशासन से लेकर तिब्बती गैर सरकारी संगठनों और संघों तक निर्वासित तिब्बती प्रतिष्ठानोंका परिचय दिया।

बेनेट विश्वविद्यालय के लिबरल आर्ट्स स्कूल में समाजशास्त्र विभाग में सहायक प्रोफेसर के तौर पर कार्यरत डॉ. कोयल वर्मा ने अपने समूह का परिचय कराया और अपनी यात्रा के उद्देश्य और छात्रों को वृहत्तरतिब्बती समुदाय को और अधिक गहराई से समझने के लिए उनके साथ जुड़ने में सक्षम बनाने के लिए इस संवाद-सत्र की उपयोगिता के बारे में समझाया,ताकि वे लोगों को समझ सकें और सामाजिक मुद्दों के प्रति संवेदनशील हो सकें।

संवाद-सत्र में भाग लेने वाले तिब्बती गैर सरकारी संगठनों और संघों- रेजिडेंट वेलफेयर एसोसिएशन (आरडब्ल्यूए), तिब्बती मुक्ति साधना, क्षेत्रीय तिब्बती महिला संघ (आरटीडब्ल्यूए), क्षेत्रीय तिब्बती युवा कांग्रेस (आरटीवाईसी), नव आगमन तिब्बती संघ और मजनुं का टीला मार्केट एसोसिएशन के प्रतिनिधियों ने परिचय दिया और क्रमशः समूह को अपने संघों के बारे में बताया।

आरडब्ल्यूए के अध्यक्ष श्री कर्मा तेनज़िन ने सम्यलिंग तिब्बती बस्ती के विकास के बारे में जानकारीदी, जिसमें तिब्बती शरणार्थियों द्वारा इसके विकास के लिए की गई कड़ी मेहनत के बारे में जानकारी थी। तिब्बती मुक्ति साधना के प्रतिनिधि ने तिब्बती आंदोलन में प्रत्येक तिब्बती शरणार्थी के स्वेच्छा से वित्तीय योगदान के बारे में बताया। आरटीडब्ल्यूए की अध्यक्ष फुर्बु डोल्मा ने समूह को तिब्बती महिलाओं द्वारा तिब्बती समुदाय के कल्याण में निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में बताया। आरटीवाईसी प्रतिनिधि ने तिब्बती युवाओं की स्वतंत्रता की आकांक्षाओं और तिब्बती स्वतंत्रता आंदोलन में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में बताया।

छात्रों के समूह को आगे तिब्बत, परम पावन १४वें दलाई लामा और भारत में तिब्बती समुदाय के अंदर की वर्तमान स्थिति के बारे में जानकारी दी गई। तदनुसार, समूह ने कई प्रश्न उठाए, जिनके उत्तरसे तिब्बती प्रतिनिधि उन्हें अवगत कराते रहे। सदस्यों के बीच अच्छी बातचीत और चर्चा हुई।

अंत में डॉ. कोयल वर्मा और उनके छात्रों को उनके भविष्य के प्रयासों के लिए शुभकामना के तौर

पर खटक और तिब्बत से संबंधित पुस्तकें भेंट की गईं।

संवादात्मक सत्र में सम्यलिंग तिब्बती सेटलमेंट कार्यालय, दिल्ली के सचिव जिग्मे छेतेन और आईटीसीओ-दिल्ली के कार्यक्रम अधिकारी चोनी छेरिंग ने भी भाग लिया।

❖ ब्रेकिंग पॉइंट पर: लॉकडाउन में तिब्बतियों की मदद की गुहार

nytimes.com / विवियन वांग, १६ सितंबर, २०२२

(चीन की लगातार सख्त कोविड नियमों ने उन क्षेत्रों के निवासियों को भी सार्वजनिक रूप से विरोध के लिए प्रेरित किया है, जिन्हें आमतौर पर चुप रहने के लिए जाना जाता है)

बीजिंग। कोरोना वायरस से संक्रमित मरीजों को उन लोगों के साथ ही रख दिया गया जो संक्रमित नहीं थे। बार-बार गुहार लगाने के बाद भी उन्हें घंटों खाना नहीं मिलता। लोगों से लदी बसों की कतारें देर रात तक उन्हें अस्थायी आइसोलेशन केंद्रों पर छोड़ने के लिए लगी रह रही हैं।

यह वर्णित दृश्य तिब्बत की राजधानी ल्हासा के निवासियों के हैं, जिन्हें कोरोना वायरस के प्रकोप को रोकने की कोशिश में अधिकारियों द्वारा एक महीने के लिए लॉकडाउन में डाल दिया गया था।

कोरोना वायरस को खत्म करने पर आमादा पूरे चीन में लॉकडाउन लगभग आम हो गया है। इसमें उसके सभी शहर भी शामिल हैं।जबकि बाकी दुनिया इसके साथ रहने की कोशिश कर रही है। लेकिन दो सीमावर्ती क्षेत्रों- तिब्बत और झिंझियांग में चीनी सरकार ने अत्यधिक दमनकारी नियंत्रण स्थापित किया है। यह इसी बात से समझा जा सकता है कि जहां के निवासी आमतौर पर चुप रहने के लिए जाने जाते हैं, वहां इतनी निराशाजनक स्थिति बन गई है कि वे मदद के लिए दयनीय गुहार लगा रहे हैं।

विवियन वांग

फिर भी अधिकारियों के लिए असंतोष के प्रति मौन धारण कर लेने की प्रवृत्ति सामान्य से अधिक कठोरतापूर्ण है। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी अगले महीने एक बड़ी राजनीतिक समारोह आयोजित करने वाली है, जहां उसके नेता शी जिनपिंग का कार्यकाल बढ़ना लगभग तय है। इसके बाद, अधिकारियों के लिए यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि 'शून्य कोविड' की स्थिति को प्राप्त करने का प्रयास सुचारू और सफल हो, जिसे श्री शी ने अपनी व्यक्तिगत प्राथमिकता घोषित कर रखी है।

लेकिन इसके जो परिणाम दिख रहे हैं, वे स्थिति को दुष्चक्र में डालने वाले हैं। अधिकारियों ने पृथकवास और सेंसरशिप के लिए सख्त नियम बनाए हैं। इसे लागू करने पर अधिक कठोरता और असंतोष पैदा हो रहे हैं।

शहर में खाद्य वितरण करनेवाले एक कर्मचारी ने आधिकारियों द्वारा प्रतिशोध लिए जाने के डर से केवल अपना मिन उपनाम बताते हुए कहा,'आप सोशल मीडिया पर ल्हासा के लोगों के जो पोस्ट देखते हैं, वे सभी उनके कष्टों के बारे में हैं, जो ल्हासा की वास्तविकता है। मुझे लगता है कि ल्हासा में की जा रहीं सभी सार्वजनिक घोषणाएं नकली हैं।'

सरकार ने अधिकारियों के उन सकारात्मक वीडियो को बढ़ावा दिया है जो फ्रंटलाइन कार्यकर्ताओं को प्रोत्साहित करते हैं और भोजन और दवा की पर्याप्त आपूर्ति का वादा करते हैं। लेकिन श्री मिन ने कहा कि उन्हें एक अधूरे अपार्टमेंट की इमारत में परिवार के पांच सदस्यों के साथ छोड़ दिया गया था, जबकि उनकी कोविड रिपोर्ट पॉजिटिव नहीं आई थी। कार्यकर्ताओं ने कहा कि अगर १० सितंबर को उनका नवीनतम परीक्षण भी निगेटिव आया, तो उन्हें रिहा किया जा सकता है। हालांकि, काफी दिनों से इस बारे में कुछ भी नहीं कहा जा रहा है।

श्री मिन ने कहा,'जब वह रिहा होने की प्रतीक्षा कर ही रहे थे कि अधिकारियों ने एक और व्यक्ति को उनके परिवार में शामिल होने के लिए इस पृथकवास केंद्र में भेजदिया,क्योंकि वे सभी नस्लीय तौर पर 'हुई' नामक अल्पसंख्यक समुदाय के सदस्य थे। लेकिन उस आदमी ने कहा कि उसकी कोरोना जांच रिपोर्ट पॉजिटिव आई है। श्री मिन ने कहा कि वह दो मास्क पहन सकते हैं और दूरी बनाए रखने की कोशिश कर सकते हैं।

पूरे चीन में प्रतिबंध कड़े किए जा रहे हैं। पिछले हफ्ते, केंद्र सरकार ने घोषणा की कि पूरे देश, यहां तक कि बिना संक्रमण के मामलों वाले क्षेत्रों को भी अक्तूबर से सभी निवासियों के नियमित परीक्षण को अनिवार्य कर दिया जाएगा। हाल के हफ्तों में लाखों लोगों को लॉकडाउन में रख दिया गया है। हाल के दिनों में कई दर्जन मामले सामने आने के बाद राजधानी बीजिंग हाई अलर्ट पर है।

हालांकि, तिब्बत और झिंझियांग में लॉकडाउन लगे एक महीने से अधिक होने को है। लगभग ९,००,०००की आबादी वाले ल्हासा में लगभग ७० प्रतिशत तिब्बती मूल के लोग रहते हैं। यहां भी सरकार ने ०८ अगस्त से कुछ क्षेत्रों को बंद करने का आदेश देना शुरू कियाऔर जल्द ही प्रतिबंध पूरे शहर में लागू हो गया। झिंझियांग के उत्तर-पश्चिमी हिस्से का एक शहर यिनिंग में भी अगस्त की शुरुआत से लॉकडाउन लागूहै।

शंघाई और चेंगदू जैसे बड़े शहरों के लॉकडाउन इस साल चीनी सोशल मीडिया पर छाए रहे। हालांकि ऐसे शहरों की तुलना में इन इलाकों में तालाबंदी ने पहली बार में अपेक्षाकृत कम ध्यान आकर्षित किया। लेकिन हाल के दिनों मेंजब प्रतिबंधों में कोई ढिलाई के संकेत नहीं दिखे तोनिवासियों ने अपनी दुर्दशा पर ध्यान आकर्षित करने के लिए एक ऑनलाइन अभियान चलाया है। कुछ ने आधिकारिक कवरेज को आकर्षित करने की उम्मीद में सरकारी मीडिया संस्थानों को टैग किया है। अन्य ने असंबंधित ट्रेंडिंग हैशटैग संलग्न किए हैं। उदाहरण के लिए एक अभिनेता पर वेश्याओं को रखने का आरोप लगाया गया है।

शायद सबसे उल्लेखनीय है कि इस तरह की दुर्दशा को बयान करने वाले सामूहिक चित्कार में एक स्वर में जातीय तिब्बतियों का भी शामिल हैं। तिब्बती एक ऐसा समूह है,जो सरकार की किसी भी आलोचना करने पर तीव्र परिणाम भुगत सकता है। श्री शी के नेतृत्व में तिब्बत में अधिकारियों ने पुनर्वास कार्यक्रमों, राजनीतिक शिक्षा और उनकी भाषा पर कार्रवाई के माध्यम से नस्लीय रूप से अलग तिब्बतियों को आत्मसात करने के लंबे समय से प्रयास तेज कर दिए हैं। तिब्बत आजकल चीन का एक हिस्सा है, जिसे आधिकारिक तौर पर तिब्बती स्वायत्त क्षेत्र के रूप में जाना जाता है।

तिब्बती स्वतंत्रता का समर्थन करने वाले एक विदेशी कार्यकर्ता समूह-तिब्बत एक्शन इंस्टीट्यूट के अनुवादों के अनुसार, टिकटॉक के चीनी संस्करण डॉयिन परकुछ निवासियों ने तिब्बती में वीडियो साझा किया है, जिसमें काम न मिलने और किराए का भुगतान करने में असमर्थ होने का वर्णन किया गया है। एक

व्यक्ति ने खुद को एक वाहन में फिल्माते हुए कहा कि वह एक महीने से अपनी कार में सो रहा है। एक महिला ने तिब्बत में कहीं और अपने गांव लौटने की अनुमति देने की याचना की और अपना भोजन समाप्त होने की चिंता का वर्णन किया है।

तिब्बत एक्शन इंस्टीट्यूट की निदेशक ल्हादोन टेथोंग ने कहा कि पहले की सूचनाओं की तुलना में इस सप्ताह तिब्बती करुण क्रंदन की बाढ़ को देखकर दंग रह गईं हैं।

उन्होंने कहा,'वे अंदर से आने वाली मदद के लिए ये करुण क्रंदन करते जिसे हम ज्यादा नहीं देख पाते हैं। इसलिए हम कह सकते हैं कि वे कष्टों की इंतिहा झेल रहे हैं।'

कई वीडियो हटा दिए गए हैं। घर जाने के लिए कहने वाली महिला के वीडियो में महिला जोर देकर कह रही है कि वह विरोध नहीं कर रही थी। यह वीडिया अब ऑनलाइन उपलब्ध नहीं है। ट्विटर जैसे चीनी प्लेटफॉर्म 'वीबो' परएक यूजर की ल्हासा के लॉकडाउन के बारे में पोस्ट को ६०००से अधिक बार साझा किया गया था। इसेबाद में फिर से पोस्ट किया गया। इस यूजर ने अन्य यूजर्स के बीच जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से सरकारी अकांउट्स पर टिप्पणी करने के लिए धन्यवाद दिया, लेकिन उन्हें टैग करना बंद करने के लिए कहा गया। उसने आगे लिखा,'बोलने के जोखिम वास्तव में बहुत अधिक हैं। मैं बहुत घबरा रही हूं।'

ल्हासा के अधिकारियों के 'बल्किुल बर्दाश्त न करने (जीरो-टॉलरेंस) नीति ने देश की प्रमुख और बहुमत आबादी वाले हान मूल की आबादी को रुला दिया है।

३० वर्षीय वेन यान ने कहा कि उसे, उसके प्रेमी और चार साथियों को सोमवार को केंद्रीकृत पृथकवास केंद्र में रखने का आदेश दिया गया था, हालांकि उनके नवीनतम जांच रिपोर्ट निगेटिव थे। वे शाम करीब चार बजे एंबुलेंस में सवार हुए। लेकिन उन्हें किसी पृथवास केंद्र में नहीं छोड़ा गया, बल्कि एक दूसरे अधूरे अपार्टमेंट परिसर में छोड़ दिया गया जिसमें७बजे के बाद तक अपार्टमेंट के बाथरूम में पानी भरा हुआ था।

उन्होंने कहा कि वहां पर उन्हें कोई भोजन नहीं दिया गया।वहां एक कार्यकर्ता ने कहा कि वे बहुत देर से पहुंचे हैं। सुश्री वेन ने कहा कि आधी रात के आसपासउसके प्रेमी और एक अन्य व्यक्ति ने कुछ कार्यकर्ताओं से भोजन की मांग की। इस पर उन्हें पीटा गया। इसके साथ ही उन्होंने उनकी चोटों की तस्वीरें भी पोस्ट की हैं।

सुश्री वेन ने भी वीबो पर अपनी तस्वीरें पोस्ट कीं, जहां उन्हें हजारों बार शेयर किया गया। अगले दिन, उसके पृथकवास केंद्र के एक अधिकारी ने उसे हटाने के लिए कहा, लेकिन वेन ने मना कर दिया।

उन्होंने कहा,'अगर ये पोस्ट मौजूद नहीं हैं, तो किसी को परवाह नहीं है। मैं उन्हें नहीं हटाऊंगा क्योंकि वे सभी सच हैं।'

उग्यूर मूल की आबादी के निवास वाले प्रांत झिंझियांग के यिनिंग में भी अनेकलोगों के लिए स्थितियां गंभीर बनी हुई हैं। वहां के निवासियों ने भोजन और महिला सैनिटरी नैपकिन की कमी के बारे में शिकायतें की हैं। उनकी दुर्दशा की कहानियांहाल तक सोशल मीडिया पर पोस्ट के तूफान तक के दौर में भी काफी हद तक अज्ञात रही हैं। पिछले हफ्ते, स्थानीय अधिकारियों ने चिकित्सा केंद्रों तक पहुंचने में निवासियों की कठिनाइयों के लिए माफ़ी मांगी।

शहर में दो बच्चों की मां हलीपा ने कहा कि हाल के दिनों में अधिकारियों ने मांस और नान दिया था। उसने तीन सप्ताह में पहली बार मांस खाया था। लेकिन वह अभी भी फल नहीं खरीद पा रही थी और इस बात से चिंतित थी कि पोषण की कमी ने उसके बच्चों की प्रतिरक्षा प्रणाली को कमजोर कर दिया है। दोनों को इसी महीने बुखार आया था।

यिनिंग सरकार ने कहा है कि वह धीरे-धीरे शहर को फिर से खोल रही है। लेकिन हलीपा ने कहा कि इस बात का कोई संकेत नहीं था कि उनके अपार्टमेंट की इमारत में निवासियों को बंद रखने वाले स्टील के ताले को हटाया जा रहा है।

जैसे-जैसे दुखों की और कहानियां ऑनलाइन सामने आई हैं, वैसे- वैसे उन्हें दबाने के प्रयास तेज हो गए हैं। कुछ ने चेतावनी दी है कि इस तरह के उपाय बहुत दुखदायी होते जा रहे हैं।

इस हफ्ते, शेडोंग प्रांत के स्थानीय अधिकारियों ने ऐलान किया कि उन्होंने अपने पड़ोस के चैट समूह में चीन के सरकारी प्रसारक के लाइवस्ट्रीम को साझा करने और लोगों से टिप्पणियां करने के लिए और मदद मांगने के लिए कहने पर एक व्यक्ति को हिरासत में लिया है। नोटिस पर टिप्पणी करते हुए एक राष्ट्रवादी सरकारी मीडिया टैब्लॉइड के सेवानिवृत्त संपादक हू ज़िजिन ने स्थानीय सरकारों को शून्य-कोविड नीतियों के प्रति सार्वजनिक समर्थन को नजरअंदाज करने के खिलाफ चेतावनी दी है।

उन्होंने अपने व्यक्तिगत वीबो पेज पर लिखा,'हमें सही ढंग से समझना चाहिए कि महामारी की रोकथाम में 'दृढ़' होने का क्या मतलब है।और अधिक कठोर उपाय जरूरी नहीं कि अधिक सही हों।' उन्होंने लिखा कि लोगों की 'समझ को जीतने के लिए कड़ी मेहनत करना' अधिक महत्वपूर्ण है।

हालांकिअधिकारी अभी भी अधिक कठोर उपाय अपनाने पर ही भरोसा कर रहे हैं।

बुधवार को विश्व स्वास्थ्य संगठन ने घोषणा की कि महामारी का अंत निकट है। यह एक ऐसी घोषणा थी, जिसके बाद चीनी सोशल मीडिया पर उम्मीद जतानेवाले और बढ़ते नियंत्रण को रोकने वाले पोस्टों की झड़ी लग गई।

गुरुवार तक वीबोने कोविड का अंत निकट कहने वाले हैशटैग 'WHO' पर प्रतिबंध लगा दिया।

विवियन वांग बीजिंग में चीन संवाददाता है। वहां से वह इस मुद्दे पर लिखती है कि कैसे देश का वैश्विक उभार और महत्वाकांक्षाएं वहां के लोगों के दैनिक जीवन को नया आकार दे रही हैं।

❖❖❖❖❖

IMPORTANT NOTICE

Dear Readers,

Firstly, I would like to express my heartfelt appreciation for the overwhelming response and support that we have received from you since the launch of Tibbat Desh Magazine.
Tibbat Desh Magazine is the only monthly Hindi Magazine on current affairs of Tibet which includes news on teachings of His Holiness the Dalai Lama, Current grave situations inside Tibet, Events & activities in Exile and of the Tibetan Freedom movement across the globe.
You must be aware, for the past 2 years, we have been receiving complaints about delay and not obtaining the Tibbat Desh magazine on time to our readers. And also we found that many of our readers either have shifted or changed their existing postal address. Therefore to review the mailing address, we request you to assist us in providing the current postal address at the below mentioned address or email.
We would also request our readers to send their feedbacks and suggestions about the magazine.

Yours Sincerely,

Tashi Dekyi
Deputy Coordinator
India Tibet Coordination Office

आवश्यक सूचना

प्रिय पाठकों,

सबसे पहले में, आप सभी का बहुत अभार व्यक्त करता हूं कि जब से तिब्बत देश मासिक पत्रिका का विमोचन हुआ आप लोगों का निरंतर समर्थन एवं शानदर भागीदारी रहा है।
तिब्बत देश, तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका है, जो तिब्बत के भीतर हो रहे चीनी दमनकारी और क्रूर नीति तथा विश्व स्तर पर परमपावन दलाई लामा के मार्गदर्शन में तिब्बती आंदोलन के बारे में भारत के सरकार और लोगों में समर्थन एवं जानकारी उपलब्ध कराना है।
आप सभी को ज्ञात है कि, पिछले दो वर्षों से, हमारे पठकों का बहुत सारे शिकायतों हमारे इस कार्यलय में प्राप्त हुआ, जिनमें कई का यह कहना था कि उनको तिब्बत देश मिल नही रहा है। साथ ही हमें यह भी जानकारी मिली है कि बहुत सारे पठकों का पता एवं आवास बदल गया है या वहां से रवाना हो चुका है।
इसलिए हम इस पत्रिका का इस बार समीक्षा कर रहे है। और आप सभी से यह निवेदन करता हूं कि अगर आपको तिब्बत देश पत्रिका प्राप्त हो रहे है तो उसकी पुष्टी हमे तुरन्त देने की कष्ट करें। आप इसकी पुष्टी हमारे नीछे लिखे गये पता या ई–मेल पर भेज सकते है।
अतः तिब्बत देश पत्रिका के संदर्भ में अपना राय एवं सुझाव हमे समय समय पर भेजने की कष्ट करें।

सादर आपका

ताशी देकि
उप–समन्वयक, भारत तिब्बत समन्वय केंद्र
नई दिल्ली

कार्यलय पताः भारत तिब्बत समन्वय केंद्र, एच–10, द्वितीय मंजील, लाजपत नगर–03, नई दिल्ली–110024
फोनः 011–29830578
ई–मेलः indiatibet7@gmail.com

भारत-तिब्बत संघ की चिंतन बैठक।

सांसद खेंपो कड़ा न्गेगडुप सोनम और लोबसांग ग्यात्सो ने पांडिचेरी के मुख्यमंत्री से भेंट की।